



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

17/6/98

सं० 16] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 18, 1998 (चैत्र 28, 1920)
No. 16] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 18, 1998 (CHAITRA 28, 1920)

इस भाग में निम्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(The page numbering is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, प्रावनों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	पृष्ठ 283	भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिस्से प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होने हैं)	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	339	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और प्रावण	
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और प्रशासनिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	1	भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, निर्यक्त और महाभियोग परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और परीक्ष्य कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	377
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	539	भाग III—खण्ड 2—पोर्टेड कार्यालय द्वारा जारी की गई वेस्टेडों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	577
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के संबंध में अधिसूचनाएं	—
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, प्रवेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1277
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	69
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के प्रावण और उप-विधियां आदि भी शामिल हैं)	*	भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुसूच	
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक प्रावण और अधिसूचनाएं	*		

*आवृत्ति प्राप्त नहीं

CONTENTS

PAGE		PAGE
	PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	283
	PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	339
	PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
	PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	539
	PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
	PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi language of Acts, Ordinances and Regulations	*
	PART II—SECTION 2—Aids and Reports of the Select Committee on Bills	*
	PART II—SECTION 3—Sub-Section (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
	PART II—SECTION 3—Sub-Section (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
	PART II—SECTION 3—Sub-Section (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Order issued by the Ministry of Defence	*
	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	377
	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	577
	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1277
	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	69
	PART V—Supplement showing Statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi	*

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिसर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1998

सं. 30-प्रज/98—राष्ट्रपति, मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा (आई सी-48700), तोपखाना (मरणोपरान्त) को उनकी असाधारण कीर्ति की विशेष सेवा के लिए “कीर्ति चक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

1. मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा,
(आई सी-48700),
तोपखाना, (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 17 जून, 1997)

17 जून 1997 को सुबह 7 बजे, मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा ने जम्मू और कश्मीर के पल्हामा जिले के काशपुर गांव के क्षेत्र में दक्षिण की ओर से प्रवेश किया और अपने एक बल को उत्तर से प्रवेश करने के लिए अलग कर दिया।

गांव में छिपे आतंकवादियों के एक समूह ने उत्तरी ओर के सैन्यबल पर अन्धाधुंध फायरिंग करते के साथ, दक्षिण की ओर दबकर भाग निकलने का प्रयास किया। अफसर ने भाग निकलने के सभी मार्गों को रोकने के लिए अपने सैन्यबल को पुनः व्यवस्थित किया। जब वे अपने सैन्यबलों को नियोजित करते हुए आगे बढ़ रहे थे, तब एक आतंकवादी ने जो नाले में छिपा हुआ था, मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा की ओर फायर किया। अफसर के कूल्हे पर एक गोली लगी। गम्भीर रूप से जख्मी होने के बावजूब, अफसर उसी जगह खड़े रहें, और उन्होंने फायर करने वाले आतंकवादी को और मूड़कर एक गोली से उसे मार गिराया।

तत्पश्चात् अफसर अपने कूल्हे से लगातार अत्यधिक खून बहने के बावजूब अपनी कमान का भार्य संभालने के लिए बाईं ओर मुड़े, जहां उन्होंने एक आतंकवादी को एक शिला के पीछे से अपने सैनिकों से जूमते हुए देखा। अपने जवानों पर आए संकट को भांपते हुए मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा ने अपने गम्भीर घाव की परवाह न कर अपने कूल्हे के सहारे से फायर करते हुए आतंकवादी पर धावा बोल दिया। आतंकवादी ने एक हथगोला उछालते हुए अफसर पर प्रभावी फायर किया।

मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा को हथगोले के टुकड़ों से गहरे घाव लगे। अत्यधिक बह रहे खून से अविचलित हुए अफसर ने अकेले ही हमला जारी रखा और समीपी लड़ाई में आतंकवादी को मार गिराया।

निकट छिपे एक अन्य आतंकवादी ने मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा पर गोली चलाई जो उनके पेट पर लगी और जिसकी वजह से वह गिर पड़े। भाग कर सहायता के लिए आए अपने बड़ों के उनके अंतिम शब्द थे “तु मेरी फिकर छोड़ उस मिलिटैन्ट को मार” और फिर इन्होंने अपनी अंतिम सांस ली।

मेजर सुखविन्दर जीत सिंह रन्धावा ने सामने लड़ी मौत के बावजूब असाधारण साहस और अदम्य रण-कौशल का प्रदर्शन किया।

2. मेजर बृज किशोर शर्मा,
(आई सी-40788),
तोपखाना, (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 09 नवम्बर, 1997)

असम में तैनात 168 फील्ड रीजिमेंट (लिंगलाला) के मेजर बृज किशोर शर्मा 09 नवम्बर, 1997 को सुबह 09.00 बजे को लगभग जब सुल्तानगंज, बिहार से श्रमिक एक्सप्रेस से अपने परिवार के साथ छूट्टी से लौट रहे थे तभी चलती गाड़ी के एक कम्पार्टमेंट में यात्रियों के साथ लूटपाट कर रहे चार सशस्त्र उग्रवादियों के साथ उनकी जबरदस्त मूठभेड़ हो गई।

सशस्त्र उग्रवादियों को अपने आस-पास के सहयात्रियों की ओर अड़ते देखकर वह उन पर टूट पड़े। उनके साथ लड़ते हुए उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए और निहत्था होने के बावजूब अतुलनीय साहस का परिचय दिया। वे वे उग्रवादियों के हथियार छीनने और उनपर काबू पाने में सफल हो गए। एक अन्य उग्रवादी ने उनकी छाती पर गोली चला दी। अपने जख्मों और उसके गंभीर परिणाम की परवाह न करते हुए वे लगातार उग्रवादियों को ललकारते रहे और अपने सहयात्रियों को प्रेरित करते रहे। उनसे प्रेरित होकर कुछ यात्री उग्रवादियों की ओर बढ़े जिससे वे घबड़ा गए और गाड़ी से कूब कर भाग खड़े हुए। जब उन्हें लगभग 19.30 बजे अस्पताल ले जाया जा रहा था तभी वे अपने जख्मों के कारण शीरगीत को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार, मंजर पद्मनाभन श्रीकुमार ने अपने सहयोगियों की संपत्ति और उनके प्राण बचाने में सेना की उच्चतम परम्परा को अनुरूप अपना सर्वोच्च बलिदान देकर असाधारण वीरता का परिचय दिया।

3. मंजर पद्मनाभन श्रीकुमार,

(आई. सी-49722),

27 राष्ट्रीय रायफलस,

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 12 दिसम्बर, 1997)

मंजर पद्मनाभन श्रीकुमार 27 राष्ट्रीय रायफल में तैनात थे। 12 दिसम्बर, 97 को उनकी यूनिट ने जम्मू-कश्मीर पंछ में ह्रीर बूध के आस-पास जंगल में छिपे आतंकवादियों का सफाया करने की कार्रवाई शुरू की।

मंजर पद्मनाभन को आतंकवादियों के संविग्रह ठिकाने की घराबंदी का कार्य सौंपा गया था। जब वे अपनी सैन्य टुकड़ी का देवूष कर रहे थे तभी 10.45 बजे उन पर पीका मशीनगन से भारी गोलाबारी शुरू हो गई, जिससे वे अन्य राईक के कार्मिक घायल हो गए और उनकी टुकड़ी पर जबरदस्त दबाव बन गया। वे अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए जंगल के बीच से निकले और उत्कृष्ट नेतृत्व व अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादियों के ठिकाने पर धावा बोल दिया। इस भीषण गोलाबारी में एक आतंकवादी को मार गिराया किन्तु इस कार्रवाई में उन्हें भी प्राणघातक जख्म लगे। इसको बावजूद मंजर पद्मनाभन श्रीकुमार अपनी सैन्य टुकड़ी को प्रेरित करते रहे और उन्होंने कार्रवाई जारी रखी जिससे चार और दुश्मन आतंकवादी मार गिराए और बड़ी मात्रा में शस्त्र और गोला-बारूद बरामद हुआ। इस कार्रवाई में वह 12 दिसम्बर, 1997 को 11.45 बजे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार, मंजर पद्मनाभन श्रीकुमार ने अग्रवाहियों से मूठभंड के दौरान नेतृत्व के गुणों, असाधारण वीरता और हृदय-कर्तव्य-परायणता का परिचय देते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

एस. के. शरीफ

राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं. 31-प्रज/98—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनके शत्रु सम्मुख वीरता पूर्ण कार्य के लिए "वीर शक्र" प्रदान करते का सुहृद अनुमोदन करते हैं :—

1. मंजर दीपेन्द्र बूचर,

(आई. सी-42330),

24 पंजाब

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 23 अगस्त, 1997)

23 अगस्त, 1997 को प्राप्त: लगभग 08.45 बजे मंजर दीपेन्द्र बूचर ने यह देखा कि जम्मू-कश्मीर के उड़ी संक्टर के उत्तरी बेलम सब-संक्टर में नियंत्रण रेखा पर उनकी अकेली

अग्रवर्ती चौकी पर शत्रु द्वारा मोर्टार, आर्टिलरी और भारी मशीन गन द्वारा फायर की जा रही थी। मंजर दीपेन्द्र बूचर, शत्रु को भारी गोलाबारी और अचूक सीधी फायर का सामना करते हुए, अपनी ओर से जवाबी फायर का निदेशन करने के लिए काल ठोच के साथ-साथ तेजी से आगे बढ़े। उन्होंने उस चौकी पर पहुंचने पर यह देखा कि वहां कारगर जवाबी कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता थी। भारी मशीन गन से अपनी चौकी पर की जा रही गोलाबारी का सामना करते हुए उन्होंने स्वयं हर-खुले स्थान पर 106 मि.मी. रिकाइल लैस गन पर स्वयं ही मोर्चा संभाला। अपनी जान को गम्भीर जोखिम में डालते हुए उन्होंने शत्रु के एक बंकर से हो रहे हमले का सामना किया तथा उसे पूर्णतः ध्वस्त करते हुए दुश्मन के दो जवान मार गिराए। शत्रु से कारगर ढंग से जुझते हुए मंजर दीपेन्द्र बूचर को दुश्मन के भारी मोर्टार गोले के छरों से गम्भीर चोट आई। अपने गम्भीर घावों की परवाह किए बिना वे रिकाइल लैस गन पर मोर्चा सम्भाले रहे और उन्होंने इस चौकी पर एक अन्य बंकर की ओर से भारी मशीनगन द्वारा कारगर ढंग से हो रहे फायर का मुकाबला करते हुए एक सीधे प्रहार द्वारा इस बंकर को तहस-नहस कर डाला। बड़ी मात्रा में रक्तस्राव होने से अर्धमूर्छित अवस्था में भी मंजर बूचर अपनी अंतिम सांस तक सैनिकों को अपने घावों की परवाह न करने के लिए कहते रहे और उन्हें कारगर जवाबी फायर करने के लिए प्रेरित करते रहे।

समाधात संबंधी वीरता और साहस की प्रतिमूर्ति मंजर दीपेन्द्र बूचर ने शत्रु के आक्रमण का सामना करते हुए भारतीय सेना की उत्कृष्ट परम्परा को अनुरूप अत्यन्त उच्च कीर्ति की वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. 2480984 लांस नायक शमशेर सिंह, 24 पंजाब,
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 23 अगस्त, 1997)

23 अगस्त 1997 को लांस नायक शमशेर सिंह, नियंत्रण रेखा के निकट उड़ी संक्टर में अपनी अकेली अग्रवर्ती चौकी पर 106 एम.एम. प्रतिक्षेपरीहा गन पर तैनात थे। लगभग 08.45 बजे, दुश्मन हमारी चौकी और तोपखाने पर मोर्टार से गोले बरसाने लगा तथा देखकर मशीनगन से भारी फायर करने लगा।

लांस नायक शमशेर सिंह ने दुश्मन के एक बंकर पर सफलतापूर्वक फायर करते हुए उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया तथा उसके दो सैनिकों को मार गिराया। जब वे दुश्मन पर प्रभावी फायर कर रहे थे तभी दुश्मन के मोर्टार गोले की किरण लगने से लांस नायक शमशेर सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। अफसर द्वारा वहां से हट जाने का आदेश देने के बावजूद गंभीर रूप से घायल लांस नायक शमशेर सिंह डरे नहीं और वहां से हटने से मना कर दिया। परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए और एक गैर-कमीशन अफसर के रूप में अपनी जिम्मेवारी तथा वचनबद्धता को समझते हुए लांस नायक

शमशेर सिंह ने 84 एम एम राकेट लांचर टुकड़ी का नियंत्रण संभाला तथा दुश्मन की चौकी पर फायर किया तथा सफलतापूर्वक दूसरी बंकर को नष्ट कर दिया तथा एक और दुश्मन को मार गिराया।

उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन करते हुए लांस नायक शमशेर सिंह ने नियंत्रण रेखा पर लगभग अर्ध-चेतन अवस्था में 84 एम एम राकेट लांचर से फायर करते हुए 23 अगस्त 1997 को अंतिम सांस ली।

इस प्रकार, नायक शमशेर सिंह ने दुश्मन का सामना करने में असाधारण वीरता, दृढ़ संकल्प और धैर्य का प्रदर्शन करते हुए भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

स. 32-प्रंज/98-राष्ट्रपति, निम्नीलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. पायलट अप्सर वैभव भागवत,
(23546) उड़ान (पायलट), (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 26 अगस्त, 1996)

पायलट अप्सर वैभव भागवत 22 जुलाई 1996 से 130 हेलीकाप्टर यूनिट की तैनात नफरी पर रहते हुए 26 अगस्त 1996 को देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

अगस्त 1996 के महीने में जब कि उस क्षेत्र में हमारी चौकियों के लिए खतरा उत्पन्न करने के लिए शत्रु ने अपनी सेनाओं को पुनः तैनात कर दिया था, पायलट अप्सर वैभव भागवत को अपरेशन मंडल क्षेत्र में कीठन वायु अनुरक्षण सर्किटों लगाने के लिए सह-पायलट के रूप में तैनात किया गया। 26 अगस्त 96 को एम आई-17 हेलीकाप्टर में दीक्षित ग्लोशियर के ऊपर हॉशियर चौकी के लिए विशेष उड़ान भरी गई। चौकी को शत्रु की गोलाबारी से खतरा था लेकिन सैनिकों को सही रखने के वास्ते आवश्यक रसद गिराने के लिए वायु अनुरक्षण की योजना बनाई गई थी। सामान गिरा दिए जाने के बाद हेलीकाप्टर पर शत्रु द्वारा जमीन से गोलाबारी करके उसे मार गिराया जिससे इसमें सभी सवार मारे गए।

पायलट अप्सर वैभव भागवत ने उच्च कौशल की बहादुरी, साहस और कर्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया और भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं को निभाते हुए देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

2. श्री देवेन्द्र सिंह, इन्दौर, मध्य प्रदेश, (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 27 जनवरी, 1997)

27-01-97 को श्री मोहन लाल, अकाउंटेंट, पनान्नाल लच्छी राम पटौल पंप, इन्दौर और उनका एक साथी श्री इन्द्र सिंह लगभग 10.30-10.45 बजे देना बैंक में 1.50 लाख रुपये जमा कराने जा रहे थे। जैसे ही वे बैंक के सामने पहुंचे जभी एक अज्ञात व्यक्ति ने, जो पास के स्कूटर स्टैंड पर खड़ा था, उन पर दो बार गोली चलाई और श्री मोहन लाल से रुपये वाला बैग छीनने की कोशिश की। जैसे ही श्री मोहन लाल ने उसकी इस कोशिश को नाकाम करने का प्रयास किया उस अपराधी ने श्री मोहन लाल पर गोली चला दी। गोली उनकी गर्दन पर लगी और श्री मोहन लाल नीचे गिर पड़े। इस बीच अपराधी और उसके साथी ने रुपये वाला बैग छीन लिया और लाल रंग की सड़की मोटर साइकिल पर भाग निकले। श्री इन्द्र सिंह ने उन पर कुछ पत्थर फेंके और शोर मचाया। शोर सुनकर श्री देवेन्द्र सिंह ने, जो उनके पास खड़े थे, अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए स्कूटर पर सशस्त्र अपराधियों का पीछा किया। जैसे ही श्री देवेन्द्र सिंह अपराधियों के पास पहुंचे और उन्हें पकड़ने की कोशिश की तो अपराधियों ने उन पर गोली चला दी। उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया जहां घायल होने के कारण उनकी मौत हो गई। अपराधियों को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

इस प्रकार, श्री देवेन्द्र सिंह ने डकैती का विफल करने में अनूकरणीय साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

3. 4269430 सिपाही रीबन्द्र कुमार दास, 8 बिहार
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 25 फरवरी, 1997)

25 फरवरी 1997 को सिपाही रीबन्द्र कुमार दास सूचना मिलने पर कुम्भी में खलाए गए गुप्त आपरेशन के स्काउट थे।

सैन्य दस्ते की उपस्थिति से अनभिज्ञ धार आतंकवादों अपहृत सरकारी जीप में सवार होकर बाजार में आए तथा अपनी ताकत और प्रसन्नता दिखाने के उद्देश्य से अन्धाधुन्ध गोला-बारी करने लगे। दस्ते ने तुरन्त जवाबी कार्रवाई की तथा मूठभंड शुरू हो गई। सिपाही रीबन्द्र कुमार दास को गोलियों की पहली बीछार पड़ी तथा उनके दोनों पैरों में गोलियां लगने से घायल हो गया।

अपने घावों की परवाह न करते हुए और लून के निशान छेड़ते हुए वे आगे बढ़े तथा जिस आतंकवादी ने इन पर गोलियां बरसाई थी उसे मार गिराया। एक अन्य रैक ने उन्हें तत्काल सहायता देने चाही लेकिन सिपाही रीबन्द्र कुमार दास ने जवाब दिया "बाद में देखेंगे"। मूठभंड में असाधारण साहस दिखाते हुए इन्होंने आतंकवादी की कारबाइन, मैगजीन सहित राइफल व अन्य कार्यालयी कारतूस तथा एक जीप बरामद की।

सिपाही रीबन्द्र कुमार दास ने इस सफल गुप्त सुनियोजित आपरेशन में अपने असाधारण साहस, पूर्ण न्यायसायिकता, व्यक्तिगत सुरक्षा की तीव्र भी परवाह न करते हुए, कर्तव्य-परायणता एवं निष्ठा का परिचय दिया।

सिपाही रविन्द्र कुमार बास ने इस सफल गुप्त सुनिर्धारित आपरेशन में अपने असाधारण साहस, पूर्ण व्यावसायिकता, अविश्वस्य सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए, कर्तव्य परायणता एवं निष्ठा का परिचय दिया।

4. जी एस-088697 वाई, डाइवर इंजन स्टॉपिक सरवन सिंह (पुरस्कार की प्रभावी तारीख 11 मार्च, 1997)

हिमांक परियोजना के जी एस-088697 वाई डाइवर इंजन स्टॉपिक (जी ई एस) सरवन सिंह को डोंजर चालक के रूप में खरदूगला टाप (उंचाई 18340 फिट) में बर्फ हटाने का कार्य पर तैनात किया गया था।

दिनांक 11 मार्च 1997 को बर्फाली आंधी के कारण 13 सैनिक गाड़ियां, 60 यांत्रिक सहित 2 सिविल बसें तथा कुछ सिविल ट्रक फंस गए थे। श्री सरवन सिंह तुरन्त ही अपने डोंजर के साथ उस क्षेत्र को क्लीयर करने पहुंचे जहाँ कि तापमान 26 डिग्री से नीचे का था तथा जहाँ बर्फाली मौसम के कारण कुछ भी देख पाना कठिन था वे तब तक अपने काम में जुटे रहे जब तक कि गाड़ियों का कार्पला सुरक्षित रूप से वहाँ से पार नहीं हुआ। उसी दिन मध्य रात्रि में एक संदेश मिला कि 60 यांत्रिक सहित 2 सिविल बसें किलोमीटर 36 के नजदीक फंसी हुई हैं। यद्यपि वह पिछले दिन दूर तक कार्य करने के कारण काफी थक चुका था, परन्तु 03.30 बजे वह एक बार पुनः अपने डोंजर सहित चल पड़े और अपनी पूरी क्षमता से तब तक कार्य करते रहे जब तक कि दोनों फंसी बसें को खरदूगला टाप पर निकाला नहीं गया। उसी दिन 07.30 बजे वह खरदूगला टाप की ओर किर्मी. 41 पर बर्फ साफ करने के लिए चल पड़े ताकि बसें आगे चल पाएँ। 400 मीटर बर्फ हटाने के पश्चात वह तथा उनकी मशीन एक बड़े बर्फ की थिला के नीचे बब भए उन्हें निकाल लिया गया और लेह अस्पताल में भर्ती कराया गया।

इस प्रकार, डाइवर इंजन स्टॉपिक सरवन सिंह ने असीक्क साहस, उत्कृष्ट वीरता, सजगता व अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करके अभूतपूर्व कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया और उन्होंने भयंकर खतरों का सामना करते हुए 60 लोगों की जान बचाई।

5. मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा (आई सी-43491), 27 असम रायफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 19 मार्च, 1997)

19 मार्च 97 को, मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा, ए सी, 27 असम रायफल्स द्वारा कीठन प्रयास से एकत्र की गई सूचना के आधार पर, नए गांव, चुंमुकिविमा, जिला कोहगा, नागालैण्ड में मुलाकात कर रहे विद्रोहियों के एक समूह को मारने के लिए फौजी कार्रवाई की गई। मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा के नेतृत्व में एक छोट्टे से दल द्वारा सामने से की गई यह सैनिक कार्रवाई बिल्कुल अपारम्परिक थी।

ज्योंही सैन्य दल संविध मकान में पहुंचा, विद्रोहियों ने अति आधुनिक हथियारों से गोलाबारी प्रारम्भ कर दी। मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा, ने विद्रोहियों की गोलाबारी की दिशा से हमला करते हुए एक विद्रोही को मार गिराया और एक अन्य विद्रोही को बुरी तरह घायल कर दिया। जैसे ही विद्रोहियों ने भागने का प्रयास किया, मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा ने गोलाबारी के बीच अपनी उत्कृष्ट सूक्ष्म का प्रदर्शन किया और विद्रोहियों के भाग निकलने के मार्ग को रोकने के लिए जिप्सी वाहन पर वापस भागे। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप दो और भीमगत्त विद्रोही उनके जाल में फंसकर मारे गए।

लगभग दो घंटे तक उनके आक्रामक नेतृत्व में चली इस फौजी कार्रवाई में आठ दूरस्थ कट्टरपन्थी मारे गए और हथियारों बड़ी संख्या में गोला-बारूदों और आपत्तिजनक दस्तावेजों सहित एक विद्रोही महिला को बरामद किया गया। इस कार्रवाई में अपनी ओर का कोई हताहत नहीं हुआ।

मेजर अमनप्रीत सिंह लेखा ने गोलाबारी का सामना करते हुए, अत्यन्त उत्कृष्ट शौर्य तथा कर्तव्य परायणता का प्रदर्शन किया।

6. 4188304 सिपाही चंदन सिंह, 19 कुमाउ (मरणोपरान्त) (पुरस्कार की प्रभावी तारीख 19 मार्च, 1997)

19 मार्च 1997 को सिपाही चंदन सिंह को जम्मू-कश्मीर के गांव बोधपुरा के अन्दर के घरे में स्टाफ के रूप में तैनात किया था।

09.20 बजे जब तलाशी दल संविध घरों के पास पहुंचा तो घर के अन्दर छिपा आतंकवादी घर के पिछवाड़े से हमारे सैन्य दल पर गोलाबारी करता हुआ शहर भागा। सिपाही चंदन सिंह ने यह अनुभव करके कि उग्रवादी घरे के एक गैप से बचकर भाग रहा था, अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए तुरन्त उस पर झपट पड़ा तथा गूथमगूथवा की लड़ाई में आतंकवादी पर अपनी सेल्फ लोडिंग राइफल से गोशियों की बोछाय कर दी। आतंकवादी ने जवाबी कार्रवाई में स्टाफ पाटी पर गोलाबारी शुरू कर दी तथा भागना शुरू कर दिया। अत्यधिक रक्तस्राव होने के बावजूब भी सिपाही चंदन सिंह ने आतंकवादी का पीछा किया तथा अंततः अकेले ही आतंकवादी को खत्म कर दिया। बाव में 19 मार्च 97 को हुए अपने घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनकी इस वीरतापूर्ण ज़र्रवाई तथा महान त्याग के कारण बाद में तलाशी दल को चार आतंकवादियों को पकड़ने तथा हथियार एवं गोलाबारूद बरामद करने में मदद मिली।

इस प्रकार, सिपाही चंदन सिंह ने अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में उत्कृष्ट वीरता, अवम्य साहस का प्रदर्शन किया तथा दूरान्त आतंकवादी के खिलाफ लड़ते हुए उन्होंने कर्तव्य-परायणता से भी आगे बढ़कर अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

7. 4262604 हवलदार विनोद कुमार शुक्ला, 17 बिहार
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 22 मार्च, 1997)

22 मार्च 1997 को जम्मू और कश्मीर के जिला श्रीनगर के बहल गांव में विशेष तलाशी अभियान चलाया गया। तलाशी के दौरान जिस घर में उग्रवादी छिपे हुए थे वहां से हमारे सैन्य-बलों पर उन्होंने भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

हवलदार विनोद कुमार शुक्ला भारी गोलाबारी से डरे बिना, अपनी जान की परवाह न करते हुए रंगते हुए अपने बड़की की गोलीबारी की आड़ में खिड़की के पास पहुंचे और अपने आप तैयार किया काम चलाउ विस्फोटक फेंका। इस विस्फोटक ने उग्रवादियों को हतोत्साहित कर दिया और उन्होंने राध के मकान में घुसकर भाग निकलने की कोशिश की।

हवलदार विनोद कुमार शुक्ला ने कमरे में धावा डालते हुए तीव्र प्रतिक्रिया की और उग्रवादी को आमने-सामने की लड़ाई में मार गिराया। उन्होंने हथियार से लैस दूसरे उग्रवादी से भी जूझना शुरू कर दिया। इस कार्रवाई में उनका सिर गोली से जखमी हो गया, हवलदार विनोद कुमार शुक्ला 22 मार्च 97 को आखिरी सांस लेने तक अन्य उग्रवादियों से लड़ते रहे।

इस प्रकार, हवलदार विनोद कुमार शुक्ला ने कार्यपरायणता से भी आगे बढ़कर उत्कृष्ट धैर्य, अदम्य साहस, परम पराक्रम, सच्चे धैर्य तथा अनुकरणीय जीवित नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने देश की सुरक्षा और अखण्डता के लिए अपने जीवन का सर्वोत्तम बलिदान दिया।

8. 4263321 नायक ललन सिंह,
17 बिहार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 22 मार्च, 1997)

22 मार्च 1997 को जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर जिले के आहल गांव में विशेष तलाशी के दौरान अच्छी मोर्चाबन्दी किए हुए आतंकवादियों ने हमारे सैन्यदल पर भारी गोलीबारी की। हमारे सैन्य दल ने जवाबी गोलाबारी की। नायक ललन सिंह तथा एक जे सी ओ भारी गोलाबारी से डरे बिना और अपनी सुरक्षा की चिन्ता भी परवाह न कर एक दूसरे को फायर-मख बने हुए रंग कर खिड़की से निकट पहुंच गए।

नायक ललन सिंह ने यह अनुभव करते हुए कि राशनी तेजी से कम हो रही है, उच्च कोटि की वीरता दिखाते हुए एक खिड़की को तोड़ कर कमरे में धावा डाल दिया तथा उग्रवादी से मठभंड की लड़ाई लड़कर उसे मार दिया।

23 मार्च को एक बार फिर नायक ललन सिंह साहस दिखाते हुए नियत घर के निकट पहुंचे, अपना संतुलन बनाए रखकर छुत्ता और कुशलता के साथ आतंकवादियों को नज़दीक पहुंच गए और एक विश्वेश आतंकवादी से मठभंड की लड़ाई करके उसे मार गिराया तथा दो गडफेल, एक सैन्ड लांचर और एक पिस्तौल बरामद की।

इस प्रकार, नायक ललन सिंह ने कर्तव्यपरायणता से भी कहीं आगे जाकर असाधारण वीरता, अदम्य साहस, प्रचण्ड पराक्रम, सच्चे धैर्य, अनुकरणीय पहलवाकिया और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

9. मेजर विश्वजीत सिंह

(आई सी-43007),

20 ब्रिटीशर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 24 मार्च, 1997)

24 मार्च 97 को 2330 बजे जम्मू और कश्मीर में चार आतंकवादियों की हमदानिया से नाराकुर की और वड़ने की सूचना मिलने पर बीमना पर तुरंत मेजर विश्वजीत सिंह ने नाराकुर और लुमानी में उनके गन्तव्य स्थान तथा ठहर कर भाग निकलने की जगहों का अनुमान लगा लिया।

2359 बजे नाराकुर में एक आतंकवादी को मार दिया गया। शेष बचे आतंकवादी हमदानिया की ओर वापस मुड़े, 0030 बजे उन्होंने मेजर विश्वजीत सिंह के आगे बढ़ रहे दल पर गोलाबारी की और हमारती क्षेत्र में लुप्त हो गए। आतंकवादियों द्वारा की जाने वाली भारी गोलाबारी के बावजूद जो 0300 बजे तक जारी रही, उस क्षेत्र का घेराव कर लिया गया।

दो आतंकवादियों ने, अंधेरे का लाभ उठाते हुए चुपके से खिसकने का प्रयास किया लेकिन मेजर विश्वजीत सिंह द्वारा मार दिए गए। दिन निकलने पर, दूर-दूर की तलाशी प्रारम्भ कर दी गई। 11 बजे एक खाली मकान में छिपे चौथे आतंकवादी ने मेजर विश्वजीत सिंह के तलाशी दल पर गोलाबारी की।

हथगोला फेंकने तथा गोलियों की औछार करने की साहसिक कार्रवाई करते हुए वे मकान में जा घुसे और आतंकवादी को मार गिराया। इस संक्रिया में मेजर विश्वजीत सिंह ने एक भूमिगत आतंकवादी को पकड़ लिया, चार आतंकवादियों में से तीन को मार गिराया तीन को ए. के. राइफल और एक पिस्तौल बरामद की।

इस प्रकार, मेजर विश्वजीत सिंह ने उच्च कोटि के सामरिक कौशल, साहस और वीरता का परिचय दिया।

10. जे सी-412227 नायक सुबेदार जोगिन्दर नाथ,
1 पैरा (संशल फोर्स)

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 13 अप्रैल, 1997)

1 पैरा संशल फोर्स के नायक सुबेदार जोगिन्दर नाथ एक सैन्य दस्ते के पिछले भाग के कमांडर थे, जिनमें मणिपुर के जिला उमखल में सफ़ीनाल रिज पर एक दारुनिष्ठ विद्रोही दल के छिपने के स्थान पर छापा मारने का कार्य होना था।

13/14 अप्रैल 97 की रात में दस्ते को छिपने के स्थान पर पहुंचने के लिए सड़की चट्टानों तथा अत्यधिक प्रतिक्षाल जंगली इलाके को पार करना पड़ा। जब दस्ता छिपने के स्थान से 1

किलोमीटर की दूरी पर रूख गया था, तभी उस पर तीन विद्रोही से स्वचालित हथियारों से भारी गोलाबारी शुरू हो गई।

नायब सूबेदार जोगिन्दर नाथ ने आगे बढ़ रहे बस्ते को सुरक्षित मार्ग उपलब्ध कराने के लिए अपने दो पिछले स्काउटों के साथ जवाबी गोलाबारी की। एक ओर की खड़ी चट्टान के कारण स्काउट महसूस करने पर उन्होंने विद्रोहियों पर हमला करने को निर्णय लिया। अकेले ही ये अपने हथियार से गोलाबारी करते हुए खड़ी चट्टान पर आगे बढ़े और विद्रोहियों पर दबाव बनाया और अपने साथियों को सुरक्षा प्रदान की। हमले के दौरान उनके कंधे में एक गोली लगी। गोली लगने के बावजूद उन्होंने एक हाथ से ही जवाबी गोलीबारी करते हुए हमला जारी रखा। एक बार फिर उनकी गर्दन में गोली लगी। बरी तरह से घायल होने के बावजूद उन्होंने तब तक जवाबी गोलीबारी जारी रखी जब तक अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त नहीं हुए।

अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने एक प्रमुख आतंकवादी को मार गिराया और 12 राउण्ड गोलाबारूद सहित अमीरका में निर्मित उसका 0.38 रिवाल्वर और बड़ी मात्रा में आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किया।

इस प्रकार, नायब सूबेदार जोगिन्दर नाथ ने अपने साथी की प्राण-रक्षा करने में अदम्य और अडिग छद्म निश्चय का परिचय देते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

11. जे-सी-218539 सूबेदार सन्तोष सिंह,
6 जम्मू और कश्मीर रायफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 21 अप्रैल, 1997)

21 अप्रैल 1997 को, सूबेदार सन्तोष सिंह, मीणपुर के संनापति जिले के गांव कोदम में विद्रोह के विरुद्ध कार्यवाही में एक प्लाटून दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे।

0345 बजे, जब गांव का चारों ओर से घेराव किया जा रहा था, आतंकवादियों ने, एक गुप्त स्थान से गोलाबारी प्रारम्भ कर दी। सूबेदार सन्तोष सिंह ने, तत्काल अपने ग्रुप को गोलीबारी करते रहने का आदेश दिया और वह स्वयं तीन अन्य रैकों के साथ भूमिगत गुप्तस्थान को नष्ट करने के लिए लट्टों की बनी झपड़ी की ओर भागे।

आतंकवादियों की गोलाबारी से विचलित हुए बिना और केवल तीन अन्य रैकों के साथ, अंधरे और कोहरे का लाभ उठाते हुए, तीव्र गति से लट्टों की झपड़ी तक पहुंच गए। उन्होंने और एक अन्य रैक ने झपड़ी के अन्दर खिड़की से दो हथगोले फेंके और अपनी ए. के. रायफलों से उनकी भारी गोली-बारी को नाकाम करते हुए छः आतंकवादियों को मार गिराया।

हथगोली, हथगोलों के विस्फोट और दोनों तरफ से हो रही गोला-बारी से विचलित हुए बिना सूबेदार सन्तोष सिंह दरवाजे की ओर भागे। दरवाजे के नजदीक, इन्होंने अपने रॉडियो आपरेटर को बचकर भाग निकलने का प्रयास कर रहे एक घायल भूमिगत के कालर को पकड़ कर घटने के दल बैठे कोश की मूत्रा में देखा।

सूबेदार सन्तोष सिंह ने, भूमिगत की छाती पर अपना पैर रखा और उसे गोली से मार गिराया तथा रॉडियो आपरेटर और एक अन्य रैक के साथ वीजीएन ली, जहां एक अन्य आतंकवादी मरा पड़ा था। उस गुप्त स्थान से सारा प्रतिरोध और गोला-बारी दान्त हो गई। मूठभंड के बाद, आठ आतंकवादी मरे पाए गए और नौ अन्य किम्ब के हथियार बरामद हुए।

इस प्रकार, सूबेदार सन्तोष सिंह ने अपनी सुरक्षा को बिल्कुल ही परवाह किए बिना बहादुरी, बंधुत्व-भावना और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

12. मेजर विक्टर क्रिस्टोफर, (आई सी-47887), सेना मेडल, 6 बिहार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 23 अप्रैल, 1997)

23/24 अप्रैल 97 की रात को, मेजर विक्टर पीटर क्रिस्टोफर, ने विशेष आसूचना के आधार पर आसाम में लंगथिंग की उत्तरी कछार पहाड़ियों में संदिग्ध गुप्तस्थल को क्षीघ्र प्रतिक्रिया बल (क्यू आर टी) का नेतृत्व किया। निर्दिष्ट स्थल पर आतंकवादियों के न मिलने पर उन्होंने अपनी कार्रवाई जारी रखी और ये लंगथिंग के निकट बने बांस के जंगल आराधर में स्थित गुप्त स्थल तक पहुंच गए।

दल के गुप्त स्थान के निकट पहुंचने पर उस पर स्वचालित हथियारों से ऊपर से भारी गोलाबारी की गई। मेजर विक्टर पीटर क्रिस्टोफर और उनके तीन सैनिक गोलीबारी से जख्मी हो गए।

सामने से नेतृत्व करते हुए भूजा से लगातार खून बहने की परवाह किए बिना यह बहादुर अफसर अपने जवानों से जा मिला और तुरन्त जवाबी गोलाबारी करने लगा तथा अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना, इस बल के साथ उस मकान पर धावा बोल दिया। गोली से लगे घाव के कारण, केवल एक हाथ से फायर करते हुए अफसर ने घर में तंजी से घुसकर एक विद्रोही को मार गिराया। भागने का प्रयास कर रहे शेष दो विद्रोही भी मारे गए। दल ने एक ए. के. रायफल, एक कारबाइन, विविध प्रकार का गोलाबारूद और आपत्तिजनक दस्तावेज भी बरामद किए।

मेजर विक्टर क्रिस्टोफर, सेना मेडल, ने तीन आतंकवादियों को मौत के घाट उतारने और हथियार एवं गोला-बारूद बरामद करने में मृत्यु से भी भय न खाने की मनोवृत्ति का परिचय देते हुए अदम्य साहस, निर्भीक छद्म निश्चय, साहसबुद्धि और वीरता का प्रदर्शन किया।

13. मेजर रमेश सम्थ (आई सी-45398), 13 राष्ट्रीय रायफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 11 जून, 1997)

11 जून 1997 को, 13 राष्ट्रीय रायफल्स बटालियन ने, जम्मू और कश्मीर के बारामूला जिले में गांव इन्दरकट तहसील

सैन्याधारित में विशेष तलाशी आग्रेडन प्रारम्भ किया। 17.00 बजे, दुर्मीजले मकान में फांसे अर्धर और आक्रामक आतंकवादियों से संघर्ष हुआ।

मेजर रमेश सम्पथ, कम्पली कमांडर ने भूतल पर दो आतंकवादियों को देखकर, नियत भक्तों को नजदीक अपने अड़धों के साथ खिड़की से गोली भारकर दो आतंकवादियों को मार गिराया। पड़ोसी मंजिल पर स्थित आतंकवादी ने, यह जानते हुए कि अफसर और उसका बड़ड़ी मकान की दीवार के साथ-साथ हैं, जोरदार सटीक गोलाबारी की ताकि अफसर और उसका बड़ड़ी वहाँ से वापस न जा सकें। भूतल पर छिपे एक अन्य आतंकवादी ने, दीवार के साथ-साथ गोलीबारी करके अफसर को उलझाए रखा। जोरदार और स्टीक गोलाबारी से विचलित हुए बिना यह अफसर खिड़की के निकट पहुंच गया और तुरन्त कार्रवाई करते हुए दो हथगोलों फेंके, जिससे एक आतंकवादी मारा गया।

मेजर रमेश सम्पथ ने जो तब भी घर की दीवार के साथ-साथ दो आतंकवादियों को बच कर निकल भागने का प्रयास करने देखकर, लगभग 21.30 बजे पांच मीटर की दिकट रेंज से उन पर धाया बोले बिना और उन्हें मार गिराया। इस गन युद्ध के दौरान, अफसर की गोली रंथी जैकट ने आतंकवादी की गोलीबारी को अप्रभावी बना दिया।

मार गये आतंकवादियों की वाद में तीन विदेशी भाड़े के सिपाहियों के रूप में निनास्त की गई। 4 ए. के. राफकन, एक पिस्तौल, दो ग्रेनेडों सेट और बड़ी मात्रा में यथु सामग्री तगमद की गई।

इस प्रकार, मेजर रमेश सम्पथ ने समाधान, छुड़ा, असाधारण हथियार प्रयोग, काशन और उल्लखॉट की वीरता का परिचय दिया।

14. जे सी-224229 सुबेदार जशपाल सिंह, 6 मिस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 22 जून, 1997)

22 जून 1997 को, 04.30 बजे, जब सुबेदार जशपाल सिंह, जम्मू और कश्मीर में श्रीनगर के बरछपरा में 15 अन्य रॉकों के साथ गश्त लगा रहते थे, इन्होंने एक मकान के अन्दर संशुद्ध गतिविधि देखी। सुबेदार जशपाल सिंह ने मकान का घेराव कर लिया और मकान की तलाशी के लिए आगे बढ़े। उस मकान पर कब्जा किए आतंकवादियों ने गोलाबारी आरम्भ कर दी। सुबेदार जशपाल सिंह ने दरवाजे के निकट गोलीशन की और उदावी गोलाबारी करने हुए एक आतंकवादी को मार गिराया।

मकान में छिपे अन्य आतंकवादियों ने, हताश होकर, प्रथमतः फेंके और भारी मात्रा में स्वचालित हथियारों से गोलाबारी की। एक आतंकवादी ने, आगे की दरवाजे से निकलने की कोशिश में सुबेदार जशपाल सिंह पर फायर किया और इन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। सुबेदार जशपाल सिंह ने, बतता का परिचय

देते हुए आतंकवादी पर फायर किया और स्वयं घायल स्थिति में गिरने से पहले उसे मार गिराया।

इसी बीच कम्प क पहुंच गई और घेराव की और पूरता कर दिया गया। स्वयं को निकासी की बजाय, सुबेदार जशपाल सिंह ने एक अपसर को साथ मिलकर आतंकवादियों के साथ लड़ाई जारी रखी। उसी समय, सुबेदार जशपाल सिंह ने एक अन्य आतंकवादी को अपनी ओर निशाना बांधते हुए देखा। सुबेदार जशपाल सिंह ने अंतिम साहसिक प्रयास में अफसर के साथ मिलकर उस आतंकवादी पर फायर किया और उसे मार गिराया। सुबेदार जशपाल सिंह गिर पड़े और अन्ततः घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। अपना कर्तव्य निभाते हुए उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया।

सुबेदार जशपाल सिंह द्वारा की गई सैनिक कार्रवाई के कारण तीन कट्टर विदेशी आतंकवादी मार गिराए गए और बड़ी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटक पदार्थों पर कब्जा किया गया।

इस प्रकार, सुबेदार जशपाल सिंह ने कर्तव्यपरायणता से भी आपे बढ़कर असाधारण साहस, बेजोड़ छुड़ा, सेवा के प्रति निष्ठा-भाव और आत्म-बलिदान की भावना का परिचय दिया।

15. 13751723 राइफलमैन सुरजीत सिंह, जम्मू एवं कश्मीर राइफल

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 28 जून 1997)

28 जून, 1997 को 11.00 बजे हत्काल कार्रवाई चल रहे थे: भारी हथियार युद्ध आतंकवादियों का मुकाबला करने के लिए 2 मराठा लाइट इंफैन्ट्री के कप्तान अफसर के साथ गांव दिहानी-गाना की ओर प्रस्थान किया। उसी रात्र में छूट्टी पर चल रहे राइफलमैन सुरजीत सिंह ने तत्काल बचकर भागने के मार्गों की अवलोकन करने के लिए सैन्य दल का मार्गदर्शन किया तथा उन्हें उस एकको मकान पर ले गया जिसमें आतंकवादी रह रहे थे। आतंकवादियों द्वारा घातक स्वचालित तथा ग्रेनेड फायर के आरम्भ संकेत था जाते हुए भी उसने मीडियम मशीनगन टुकड़ी को पोजीशन लेने में सहायता की तथा गोलाबारूद लाने के लिए स्वयं को जोरिय में डालकर गोलीबारी के बीच से होकर गुजरने और वह तब तक गोलाबारूद ले आते रहे जब तक गंभीर रूप से घायल नहीं हो गए तथा दोर में मशीनगन को गोली लगने से गिर पड़े और उनकी मृत्यु हो गई। 15 मिनट करके, उन्होंने उल्लखॉट के साहस, साधन से बढ़कर निष्ठा के अत्यंत उच्च गुणों को प्रदर्शित किया। गिर गये गोली लगने से उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई।

इस प्रकार, राइफलमैन सुरजीत सिंह ने आतंकवादियों का सामना करते हुए असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

16. 13616857 लॉस नायक सरपुद्दीन खां, 1 पैरा (स्पेशल फोर्स)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 11 जुलाई, 1997)

11/12 जुलाई 97 को 1 पैरा स्पेशल फोर्स 'सी' टीम के लॉस नायक सरपुद्दीन खां गांव धिनकांगफट, जिला बुधबंदपुर, मणिपुर में घेरा डालने तथा तलाशी कार्रवाई के दौरान सीटिंग स्काउट थे।

बाहरी घेरा घातने का काम पूरा होने पर, तलाशी दल, जिसके लॉस नायक सरपुद्दीन खां स्काउट थे, संदिग्ध घरों की तलाशी लेने के लिए गांव में घुसा। अचानक दल पर पहले मकान से स्वयंचालित हथियारों से भारी गोला-बारूक होने लगी। सैन्य दल ने जलायी गोला-बारूक की तथा ट्रप कमांडर उस मकान की ओर भागे। अपने ट्रप कमांडर को देख कर लॉस नायक सरपुद्दीन खां आड़ से बाहर निकले और भागते हुए फायर करते हुए ट्रप कमांडर को कवरेज फायर देते हुए मकान की ओर बढ़े। मकान पर पहुंचकर लॉस नायक सरपुद्दीन खां तथा ट्रप कमांडर नेत्री से मकान में घुस गए जिससे आतंकवादी चिंतित रह गए।

मकान में घुसने पर लॉस नायक सरपुद्दीन खां का मकानवाला अपने दाएं बिल्कुल पास में खड़े दो आतंकवादियों से हुआ। घुसा कमांडो सैनिक ने अटल धैर्य तथा संयोजन का प्रदर्शन करते हुए एक आतंकवादी को मीके पर ही मार गिराया तथा दूसरे आतंकवादी पर तबे कराटे का पक्ष प्रहार किया जिससे उसका संपूर्ण विरगड गया, फिर ये आतंकवादी पर झपटे और उसकी मिर में गोली मार दी। इस पूरी कार्रवाई में ही आतंकवादी मारे गए, तैरह पकड़े गए तथा भारी मात्रा में हथियार/गोला-बारूक बरामद किया गया।

इस प्रकार, लॉस नायक सरपुद्दीन खां ने आतंकवादियों का मुकाबला करने में अत्यंत साहस का प्रदर्शन किया तथा मुठभेड़ की लड़ाई में अकेले ही दो सशस्त्र आतंकवादियों को मार गिराया।

17. 4263681 लॉस नायक कामता पांडेय, 17 बिहार (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 12 जुलाई, 1997)

12 जुलाई 1997 को विशेष सूचना के आधार पर जम्मू और कश्मीर के श्रीनगर जिले के कांडाबल गांव में एक संदिग्ध मकान का घेराव 17 बिहार द्वाारा प्रभावशाली ढंग से किया गया।

जैसे ही तलाशी दल लक्ष्य मकान की नजदीक आया, युद्ध के लिए तैयार भाड़े के विदेशी सैनिकों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। बचने के आसार नजर न आने पर उनमें से एक ने दूर-साहस कर लक्ष्य मकान में छनक लगा दी।

अल्फा कम्पनी के लॉस नायक कामता पांडेय ने तुरंत बचकर भागते हुए भाड़े के सैनिक को उलझाया। दूसरे भाड़े के सैनिक ने अपने लड़ाई पर आए खतरे को महसूस करते हुए लॉस नायक

कामता पांडेय पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी जिससे वे घायल हो गए। अपने जख्मों की परवाह न करते हुए और यह निश्चय का प्रदर्शन करते हुए लॉस नायक कामता पांडेय ने पहले भाड़े के विदेशी सैनिक को मार गिराया। दूसरे भाड़े के सैनिक ने लॉस नायक कामता पांडेय पर अंधाधुंध फायर करने लगा निकल भागने का प्रयास किया, लॉस नायक कामता पांडेय ने अपने जख्मों की परवाह न करते हुए समीची लड़ाई में उसे मार गिराया। फिर इन्होंने मकान में छिपे तीसरे भाड़े के सैनिक पर फायर किया और धीरगति प्राप्त करने से पहले उसे भारी तरह घायल कर दिया।

इस प्रकार लॉस नायक कामता पांडेय ने परम वीरता, अदम्य साहस, अति दिलेरी, मुठभेड़ की अडिगता और कर्तव्य से भी बढ़कर निष्ठा का प्रदर्शन किया तथा भाड़े के विदेशी सैनिकों से लड़ते हुए अपने प्राण न्यायावर कर दिए।

18. सेक्रेण्ड लेफ्टिनेंट परमजीत सिंह बाजवा (अर्द्ध सी-56643), 6 पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 19 जुलाई, 1997)

18/19 जुलाई 97 की रात को 10.00 बजे सेक्रेण्ड लेफ्टिनेंट परमजीत सिंह बाजवा को अधीन 'हाई रिस्क मिशन टीम' को हमला दल के सदस्य के रूप में, जम्मू और कश्मीर के जिला उधमपुर में गांव निके, तटस्थता माहौर के क्षेत्र को आतंकवादियों से मुक्त करने का आदेश दिया गया।

12.45 बजे, बालू की तपहटी की तलाशी करते हुए दल पर एक शिलाखण्ड को नीचे भारी स्वचालित फायर होने लगा। सेक्रेण्ड लेफ्टिनेंट परमजीत सिंह बाजवा ने तत्काल कारगर ढंग से प्रतिक्रिया किया। अपने सैन्यदलों को खतरे को भयानकता से हो रही भारी जवाबी गोलाबारी के बावजूद उस गुप्तस्थान में ही हथ-गोले फेंके। फिर इन्होंने स्वयं उस गुप्त स्थान पर फायर किए और अन्तर छिपे चार विदेशी भाड़े के सिपाहियों को मार गिराया। धार ए. के. रायफल, बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए।

निजी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए सेक्रेण्ड लेफ्टिनेंट परमजीत सिंह बाजवा निकट गए और अन्तर से हो रही भारी जवाबी गोलाबारी के बावजूद उस गुप्तस्थान में ही हथ-गोले फेंके। फिर इन्होंने स्वयं उस गुप्त स्थान पर फायर किए और अन्तर छिपे चार विदेशी भाड़े के सिपाहियों को मार गिराया। धार ए. के. रायफल, बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए।

इस प्रकार, सेक्रेण्ड लेफ्टिनेंट परमजीत सिंह बाजवा ने, उग्र-वादिनों से युद्ध करते समय अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए, उच्च कर्तव्य की दहादुरी और साहस का प्रदर्शन किया।

19. मेजर जैसन जैकब जेसु, (आई सी-52956), 11 मराठा लाइट इन्फेन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 07 अगस्त, 1997)

6 अगस्त 1997 को, एक स्रोत से यह सूचना मिलने पर कि असम के दरंग जिले में गांव साराबरी में कुछ आतंकवादियों की असम में मुलाकात की सम्भावना है, मेजर जैसन जैकब जेसु ने, जो एडजुटेंट और कम्पनी कमांडर; दोनों की ड्यूटी निभा रहे थे, सूचना का शीघ्र विश्लेषण किया, फौजों के संयुक्त कालम का नेतृत्व किया और 07 अगस्त 1997 को बिन निकलते ही गांव को घुपके से घेर लिया।

घर-घर की तलाशी करते हुए, मेजर जैसन जैकब जेसु और उनका तलाशी दल एक गलान में छिपे आतंकवादियों की गोलीबारी की घण्टे में आ गया। मेजर जैसन जैकब जेसु की छाती की बाईं तरफ गोली की रगड़ से घाव हो गया और उनके तलाशी दल को भी आतंकवादियों ने अपनी गोलीबारी से बहुत ही प्रभावशाली ढंग से आक्रामक कर दिया।

घाव और अपनी जान का खतरा होने के बावजूद दो जवानों को इन्होंने आदेश दिया कि उन्हें कविरिंग फायर दे और स्वयं ने मकान पर हमला कर दिया, ठीकर मारकर बरबाद होला और दो में से एक आतंकवादियों को मार गिराया। एक स्टन मशीन कार-वाहन, गोला-बारूद और ग्रैनेड वहां मिले।

तत्पश्चात्, अफसर ने शेष आपरेशन का संचालन किया, जिसके परिणामस्वरूप सात और आतंकवादी मारे गए और एक अति आधुनिक रिमोट कंट्रोल एक्सप्लोसिव डिवाइस और दो आई सी ओ एम रेडियो सेटों के अतिरिक्त बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद हुए।

इस प्रकार, मेजर जैसन जैकब जेसु ने उभरावियों में युद्ध करते हुए पूर्ण धैर्य, अडिग दृढ़निश्चय, असीम साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

20. लेफ्टिनेंट कमांडर कमल सिंह, (02728-जेड)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 14 सितम्बर, 1997)

14 सितम्बर 1997 की सुबह विशाखापत्तनम एक अभूतपूर्व दुर्घटना के कगार पर था। एच पी सी एल में एल पी जी गैस को रिमाइने ने आग पकड़ ली और देखते ही देखते इस आग ने भयंकर रूप धारण कर लिया। एक के बाद एक होने वाले विस्फोटों ने आग की निकटवर्ती उत्पाद स्टोरेज पी ओ एल टैंक और एल पी जी गैस स्टिफर्स तक फैला दिया। इस विस्फोटों को मंजूर और आग के विशाल मार्गी गोलों को देखकर लेफ्टिनेंट कमांडर कमल सिंह स्वयं ही पहल करते हुए तुरन्त पतन रक्षा मुख्यालय की तरफ दौड़े।

लगभग 7.00 बजे स्थिति का मूल्यांकन करते हुए कि एक खतरनाक स्थिति बन रही है और आगे-आगे आग से लड़ना और भी मुश्किल हो सकता है, लेफ्टिनेंट कमांडर कमल सिंह

पात और स्थापनाओं को संवधान करते हुए उपलब्ध नौसैनिक संसाधनों को जुटाने में लग गए। वे नौसैनिक टीम के साथ रिफाइनरी पहुंचने और स्थितियों का यथावत मूल्यांकन करके आग बुझाने की कार्रवाई संचालित करने में लग गए। इस अफसर को यह महसूस हुआ कि जल रहे एल पी जी गैस स्टिफर्स कभी भी फट सकते हैं। झुलसने वाले ताप, विषैली कालिख और लपटों की चमक के बावजूद लेफ्टिनेंट कमल सिंह ने जबरदस्त फूटी का प्रदर्शन करते हुए टैंक 125 पर लगी आग के पास जाकर व्यक्तिगत रूप से नौसैनिक/एच पी सी एल/पतन कार्मिकों का विनाशकारी आग से लड़ने के लिए नेतृत्व किया और आखिरकार इस पर काबू पा लिया।

पूरा दिन लगातार आग से लड़ते हुए इस अफसर ने लगभग 17.00 बजे महसूस किया कि पश्चिम दिशा से चलने वाली हवाओं से लपटों के फैलकर अभी तक सुरक्षित डीजल टैंकों की आर बढ़ने का खतरा हो रहा है। लेफ्टिनेंट कमांडर कमल सिंह ने एक बार फिर अप्रत्यक्ष खतरे और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अत्यधिक खतरनाक स्थितियों में धक्का देकर टैंक के नजदीक जाकर निकट से अग्निशमन नल से फायर होज को पूरी सक्षम-बुझ के साथ लगा दिया। ये अफसर भयभीत करने वाली स्थितियों में 14/15/16 सितम्बर 97 को अग्नि-स्थल पर 48 घंटे से भी अधिक निडरता और अनथक रूप से आग बुझाने का कार्य करते रहे।

इस प्रकार, लेफ्टिनेंट कमांडर कमल सिंह ने अपनी जान जोखिम में डालकर और कर्तव्यपरायणता से भी आगे बढ़कर असाधारण वीरता, अनुकरणीय साहस एवं नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

21. लेफ्टिनेंट कमांडर विनोद कुमार झा, (02761-जेड)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 14 सितम्बर, 1997)

रविवार, 14 सितम्बर 1997 की सुबह लेफ्टिनेंट विनोद कुमार झा एम ओ सी (बी) में ड्यूटी अफसर थे। सुबह लगभग 06.30 बजे इन्होंने भारी विस्फोट की आवाज सुनी जिससे सारा का सारा एम ओ सी (बी) परिसर हिल गया और बरबाद तथा लिडिंकियों के शीशे टूट गए। लेफ्टिनेंट कमांडर झा उत्सुकता से बाहर की ओर भागे तथा स्थिति का जायजा लिया। लेफ्टिनेंट कमांडर झा ने जान-माल पर उमड़ते खतरे का साया देखते ही तत्काल ड्यूटी कमांडर को सूचित किया और स्वयं प्रथम जांच के लिए दुर्घटना क्षेत्र की ओर चल पड़े।

घटना स्थल पर पहुंचते ही लेफ्टिनेंट कमांडर झा ने जबरदस्त हलचल देखी जिसमें लॉग बूझबुझी में हथोर-उधर भाग रहे थे। भारी मात्रा में पेट्रोलियम पदार्थ तथा एल पी जी भरते टैंक धूँ-धूँ कर उग्र रूप से जेल रहे थे। स्थिति का जायजा लेने के लिए कोई भी आग वाले क्षेत्र की ओर जाने की तैयारी नहीं था।

एच पी सी एल आवाहने के विभिन्न भागों में आग पूरी तरह फैल चुकी थी। उस समय आवश्यक यह था कि तत्काल उपलब्ध स्रोतों को काग में लाकर आग पर काबू पाया जाए ताकि वह

बीजल तथा मिट्टी के तेल से भरे छ: भारी टैंकों तक न पहुंच पाए। लैफ्टनेंट कमांडर बी. के. झा ने विभिन्न हिस्सों में फैली प्रचण्ड आग के नजदीक जाकर स्थिति का जायजा लिया तथा इसकी महत्वपूर्ण सूचना एम सी डी वी को तथा बंदरगाह रक्षा मुख्यालय को पहुंचाई।

शुरू में जबकि और विस्फोट होने का भय सबसे ज्यादा था, लैफ्टनेंट कमांडर झा ने धुंध-धुंध भाग-भाग कर लोगों को सहायता के लिए कहा ताकि इस खतरों को रोका जा सके। आई ओ सी टर्मिनल क्षेत्र, जोकि बहुत खतरों में था लैफ्टनेंट कमांडर झा ने लैफ्टनेंट पिब्लिह के साथ मिलकर तेल टैंकों को दो रेलवे रैकों का सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया तथा आग को बड़ों से रोके दिया गया। आसन्न खतरों को टाल कर इन्होंने लैफ्टनेंट पिब्लिह के साथ मिलकर अपना ध्यान जलते हुए टैंकों को उन टैंकों से अलग हटाने में लगा दिया जो अभी सुरक्षित थे। इसके लिए इन्होंने तपते हुए वाल्वों को पहचान कर उन्हें बंद करके अलग किया। तत्पश्चात् लैफ्टनेंट कमांडर झा ने घटना स्थल पर उपलब्ध अग्नि शमन साधनों को इकट्ठा किया तथा उन विस्फोटकों को भय से दूर खड़े किए हुए अग्नि शमन टैंडरों से उन टैंकों को ठण्डा करने का अनुरोध किया जो अभी सुरक्षित थे। लैफ्टनेंट कमांडर झा द्वारा दिखाई गई बहादुरी के व्यक्तिगत उदाहरण ने घटनास्थल पर उपस्थित अन्य लोगों को भी नौसेना कर्मिकों के छेड़ से बचाव दल में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

लैफ्टनेंट कमांडर झा ने ध्वस्त हो चुके प्रशासनिक तथा कंफेडेरिया भवन से मृतकों को निकालने के कार्य में व्यक्तिगत योगदान दिया। इस विपरीत समय में इनके द्वारा सतर्कता से बनाई गई योजना तथा दर्शाए गए अनुकरणीय साहस का परिणाम यह हुआ कि सभी लोगों ने बड़े जोश के साथ इनका साथ दिया तथा शुरू में ही आग को और बरबादी करने से रोके दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना इन्होंने अपने अधिक प्रयासों से अपने साथ कार्यरत लोगों (0)को भरपूर प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार, लैफ्टनेंट कमांडर विनाय कुमार झा ने अपनी जान को जोखिम में डालकर असाधारण वीरता का परिचय दिया।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग

नियम

नई दिल्ली, दिनांक 18 अप्रैल 1998

सं. 9/2/98-के. से.-2—कर्मचारी चयन आयोग द्वारा 1998 में केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा, रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा, पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना), केन्द्रीय सतर्कता आयोग, संसदीय कार्य मंत्रालय तथा चुनाव आयोग के उच्च श्रेणी ग्रेड, की चयन सूचियों में सम्मिलित करने के लिए एक सीमित विभागीय प्रतियोगिता परीक्षा के लिए नियम सर्वसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किए जाते हैं।

2. चयन सूची में शामिल करने के लिए चयन किए जाने वाले व्यक्तियों की संख्या आयोग द्वारा जारी की जाने वाली विज्ञप्ति में विधिप्रीकृत की जाएगी। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से संगीधत अभ्यर्थियों के लिए आरक्षण भागकर्ता संवर्ग/कार्यालयों द्वारा आयोग को भेजी गई रिक्ति को ध्यान में रख कर किया जाएगा।

“अनुसूचित जाति/जनजाति का अर्थ है ऐसी कोई जाति/जनजाति जिसे संविधान के अनुच्छेद 341/342 के तहत समय-समय पर जारी आदेशों के विनिर्दिष्ट किया गया हो।”

2क. शारीरिक रूप से विकलांग (आ. वि. एवं बीधर) उम्मीदवार के लिए आरक्षण किए जाएंगे।

3. कर्मचारी चयन आयोग द्वारा इस परीक्षा का कार्य संचालन इन नियमों के परिशिष्ट में विहित विधि से किया जाएगा।

किस तारीख को और किन-किन स्थानों पर परीक्षा की जाएगी, इसका निर्धारण आयोग करेगा।

4. पात्रता की शर्तें :—केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा तथा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय अथवा चुनाव आयोग के अवर श्रेणी ग्रेड का ऐसा कोई स्थायी अथवा नियमित रूप से नियुक्त अस्थायी प्राधिकारी जो 1-8-98 को दिम्नीविहित शर्तें पूरी करता हो, परीक्षा में बैठ सकेंगा।

(1) 1-8-1998 को केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा के अवर श्रेणी ग्रेड में अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना), केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय अथवा चुनाव आयोग के अवर श्रेणी लिपिक के पद पर, उसकी पांच वर्ष से कम की अनुमोदित तथा लगातार सेवा नहीं होनी चाहिए।

परन्तु यदि वह केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा

केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय अथवा चुनाव आयोग के अवर श्रेणी ग्रेड में उसकी नियुक्ति प्रति-योगितात्मक परीक्षा जिसमें सीमित विभागीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा के परिणाम निर्णायक तारीख से कम से कम पांच वर्ष पहले घोषित हुए होने चाहिए तथा उसकी उस ग्रेड में कम से कम चार वर्ष की अनुमोदित और लगातार सेवा होनी चाहिए।

टिप्पणी :—(1) स्वीकृत तथा लगातार सेवा की 5 वर्ष की सीमा उस अवस्था में भी लागू होगी यदि किसी उम्मीदवार की कुल दिव्यारणीय सेवा अंशतः केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा, पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग तथा संसदीय कार्य मंत्रालय अथवा चुनाव

आयोग में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में और
अंशतः उच्च श्रेणी लिपिक के रूप में की गई
हों।

टिप्पणी :—(2) केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे
बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन
विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय
सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय
अथवा चुनाव आयोग का कोई स्थायी अथवा
नियमित रूप से नियुक्त अस्थायी अवर श्रेणी
लिपिक जिसमें 26 अक्टूबर 1962 को जारी
की गयी आपातकाल को उद्घोषणा के प्रवर्तन
काल में अर्थात् 26 अक्टूबर, 1962 से 9
जनवरी, 1968 तक सशस्त्र सेना में सेवा की
हो, सशस्त्र सेना से प्रत्यावर्धन पर सशस्त्र सेना
में अपनी सेवा की अवधि (प्रशिक्षण की अवधि
मिलाकर, यदि कोई हो) निर्धारित न्यूनतम
सेवा में गिन सकेंगे, अथवा

टिप्पणी :—(3) ऐसे अवर श्रेणी लिपिक जो सक्षम प्राधिकारी
की अनुमति से निःसंवर्गीय पदों पर प्रति-
नियुक्त पर हों उन्हें, अन्यथा पात्र होने पर इस
परीक्षा में भाग लेने का पात्र समझा जाएगा।
तथा यह बात उन अवर श्रेणी लिपिकों पर लागू
नहीं होती जो स्थानान्तरित रूप में निःसंवर्गीय
पदों पर या अन्य सेवा में नियुक्त किए गए हों
और केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा
रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा
पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय
सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय
अथवा चुनाव आयोग के निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहण
अधिकार (लियन) न रखते हों।

(2) आयु :

(क) 1-8-1998 को उसकी आयु 50 वर्ष से अधिक नहीं
होनी चाहिए अर्थात् उसका जन्म 2-8-1948 से
पूर्व नहीं हुआ हो।

(ख) ऊपर लिखित उपरी आयु सीमा में निम्नलिखित
और छूट होंगी—

- (1) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित
आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक 5
वर्ष तक।
- (2) किसी दूसरे देश से संघर्ष के दौरान अथवा
उपद्रव-ग्रस्त इलाकों में फौजी कार्यवाहियों को
करते समय अशक्त हुए तथा उसके परिणाम-
स्वरूप नौकरी से निम्नित रखा सेवा कर्मियों के
मामले में अधिकतम 3 वर्ष तक (अनुसूचित
जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए आठ वर्ष)।

(3) 1971 में हुए भारत-पाक संघर्ष के दौरान
फौजी कार्यवाहियों में विकलांग हुए तथा उसके
फलस्वरूप निम्नित किए गए सीमा सुरक्षा बल
के कर्मियों के मामले में अधिकतम 3 वर्ष तक
(अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए
आठ वर्ष)।

(4) टंकण परीक्षा—यदि किसी उम्मीदवार को अवर
श्रेणी ग्रेड में स्थाईकरण के उद्देश्य से संघ लोक
सेवा आयोग/सचिवालय प्रशिक्षणशाला/सचिवालय
प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान (परीक्षा स्कन्ध)/
अधीनस्थ सेवा आयोग/कर्मचारी चयन आयोग
और हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत राजभाषा
विभाग की मासिक/तिमाही टाइप की परीक्षा
उत्तीर्ण करने से छूट न मिली हो तो इसमें से
किसी एक संगठन से इस परीक्षा की अधिसूचना
की तारीख को या इससे पहले उसे टाइप की
परीक्षा उत्तीर्ण कर लेनी चाहिए।

5. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता
के बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा।

6. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया
जाएगा जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश पत्र (सर्टिफिकेट
आफ एडमिशन) न हो।

7. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग द्वारा निम्नलिखित
बातों के लिए बोधी क्षीणित कर दिया जाता है या कर दिया गया
हो कि उसने :—

- (1) किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन
प्राप्त किया है, अथवा
- (2) नाम बदलकर परीक्षा दी है, अथवा
- (3) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप में कार्य कराया है,
अथवा
- (4) जाली प्रमाण-पत्र या ऐसे प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए हैं,
जिनमें तथ्यों को बिगाड़ा गया हो, अथवा
- (5) गलत या झूठे दस्तावेज दिए हैं या किसी महत्वपूर्ण
तथ्य को छिपाया है, अथवा
- (6) परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए किसी अन्य अनियमित
अथवा अनूचित उपायों का सहारा लिया है, अथवा
- (7) परीक्षा भवन में अनुचित तरीके अपनाए हैं, अथवा
- (8) परीक्षा भवन में अनुचित आचरण किया है, अथवा
- (9) असंगत सामग्री लिखना जिसमें पांडुलिपि में अश्लील
भाषा या अश्लील सामग्री भी शामिल है, या
- (10) परीक्षा संचालन के दौरान परीक्षा भवन से प्रश्न
पुस्तिका/उत्तर पत्रक ले गया हो या इसे किसी अनधिक-
ृत व्यक्ति को दिया हो।

- (11) आयोग द्वारा परीक्षा के संचालन के लिए नियुक्त स्टाफ को तंग किया है अथवा शारीरिक चोट पहुंचाई है, अथवा
- (12) अपने प्रवेश पत्र के साथ जारी किए गए किसी अनुबोध का उल्लंघन किया है, अथवा
- (13) उपर्युक्त खंडों में उल्लिखित सभी अथवा किसी कार्य द्वारा आयोग को अव्यवस्थित करने का प्रयत्न किया है, तो उस पर अपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रोसीक्यूशन) चलाया जा सकता है और उसके साथ ही उसे :—

(क) आयोग द्वारा इस परीक्षा, जिसका यह उम्मीदवार है बैठने के लिए अयोग्य ठहराया जा सकता है, अथवा

(ख) उसे अस्थायी रूप से अथवा एक विशेष अवधि के लिए :—

- (1) आयोग द्वारा ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिए,
- (2) केन्द्रीय सरकार के अधीन किसी भी नौकरी से वारिक्त किया जा सकता है, और
- (3) उसके विरुद्ध उपर्युक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

8. यदि कोई उम्मीदवार किसी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त करने में कोई कोशिश करेगा या आयोग द्वारा उसका आचरण ऐसा समझा जाएगा जिससे उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य करार दिया जाएगा।

9. आयोग परीक्षा के बाद हर एक उम्मीदवार को अंतिम रूप से दिए गए कुल अंकों के आधार पर उसकी योग्यता के क्रम से उनके नामों की छः अलग-अलग सूचियाँ तैयार करेगा और उसी क्रम से उतने ही उम्मीदवारों के नाम अपेक्षित संख्या तक उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में शामिल करने की सिफारिश करेगा जो आयोग के निर्णय अनुसार परीक्षा द्वारा योग्य माने गए हों।

टिप्पणी : उम्मीदवारों को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि यह प्रतियोगिता परीक्षा है न कि अर्हक परीक्षा (क्वालीफाइंग एग्जामिनेशन)। इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में कितने उम्मीदवारों के नाम शामिल किए जाएं उनका निर्णय करने के लिए सरकार पूरी तरह सक्षम है। इसीलिए कोई भी उम्मीदवार अधिकार के तौर पर इस बात का कोई दावा नहीं कर सकेगा कि उसके द्वारा परीक्षा में दिए गए उत्तर के आधार पर उसका नाम प्रवर सूची में शामिल किया जाएगा।

10. हर एक उम्मीदवार को परीक्षा फल की सूचना किस रूप में तथा किस प्रकार से दी जाए, इसका निर्णय आयोग अपने

विवेकानुसार करेगा और आयोग परिणामों के बारे में उनसे कोई पत्र-व्यवहार नहीं करेगा।

11. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने से चयन का अधिकार तब तक नहीं मिलता जब तक कि संबंधित प्राधिकारी आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए कि सेवा में उसके आचरण का देखते हुए उम्मीदवार हर प्रकार से चयन के लिए उपयुक्त है।

किन्तु इस संबंध में निर्णय कि क्या आयोग द्वारा चयन के लिए सिफारिश किया गया कोई विशेष उम्मीदवार उपयुक्त नहीं है, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के परामर्श से किया जाएगा।

12. जो उम्मीदवार इस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन-पत्र देने के बाद या परीक्षा में बैठ जाने के बाद केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा/रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा/पर्यटन विभाग/केन्द्रीय सतर्कता आयोग संसदीय कार्य मंत्रालय चुनाव आयोग के अपने पद से त्याग पत्र दे देगा अथवा अन्य किसी प्रकार से उस सेवा को छोड़ देगा या उससे अपना संबंध विच्छेद कर लेगा या जिसकी सेवा उसके विभाग द्वारा समाप्त कर दी गई या किसी निःसंवर्गीय पद या दूसरी सेवा में स्थानान्तरण द्वारा नियुक्त किया जा चुका है और के. स. लि. सेवा/रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा/पर्यटन विभाग/केन्द्रीय सतर्कता आयोग/संसदीय कार्य मंत्रालय/चुनाव आयोग के निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहण अधिकार न रखता है वह इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा।

तथापि यह उस अवर श्रेणी लिपिक पर लागू नहीं होता जो सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से किसी निःसंवर्गीय पद पर प्रतिनियुक्ति किया जा चुका हो।

हरबदे सिंह धीमान
अवर सचिव

परिशिष्ट

परीक्षा निम्नलिखित योजना के अनुसार होगी।

भाग-1. नीचे परिच्छेद में बताये गए विषयों की कुल 300 अंकों की लिखित परीक्षा होगी।

भाग-2. आयोग द्वारा विवेकानुसार ऐसे उम्मीदवारों के सेवा पत्रों (रिजल्ट ऑफ सर्विस) या मूल्यांकन के लिखित परीक्षा में ऐसा न्यूनतम स्तर प्राप्त करते हैं, जिनके बारे में आयोग फैसला करेगा और उसके लिए अधिकतम अंक 100 होंगे।

2. भाग 1 में बताई गई लिखित परीक्षा के विषय प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए अधिकतम अंक तथा दिया जाने वाला समय इस प्रकार होगा :—

विषय	अधिकतम अंक	समय
प्रश्न पत्र I. (वस्तुनिष्ठ प्रकार)		
(क) सामान्य ज्ञान 100 प्रश्न	200 अंक	2 घंटे
(ख) अंग्रेजी भाषा का परिज्ञान तथा लेखन योग्यता 100 प्रश्न		
प्रश्न पत्र II टिप्पण आलेख-I तथा कार्यालय पद्धति 100 प्रश्न		

प्रश्न-पत्र 1. वस्तुनिष्ठ बहुविकल्प प्रकार का होगा जबकि प्रश्न-पत्र-2 वर्णनात्मक प्रकार का होगा।

टिप्पणी : निम्नलिखित श्रेणियों के उम्मीदवारों के लिए टिप्पण, प्राप्त लेखन तथा कार्यालय पद्धति के प्रश्न-पत्र अलग-अलग होंगे।

(1) केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा, पर्यटन विभाग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, मंसदीर कार्य मंत्रालय तथा चुनाव आयोग

(2) रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा।

3. परीक्षा का पाठ्य विवरण नीचे दी गई अनुसूची के अनुसार होगा।

टिप्पणी 1 : उम्मीदवारों को प्रश्न पत्र टिप्पण-1। आलेख तथा कार्यालय पद्धति के उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी में देने का विकल्प दिया जाता है।

टिप्पणी 2 : यह विकल्प पूरे प्रश्न-पत्र को लिये होगा न कि एक ही प्रश्न पत्र में अलग-अलग प्रश्नों के लिए।

टिप्पणी 3 : जो उम्मीदवार उपरोक्त प्रश्न-पत्र के उत्तर अंग्रेजी में अथवा हिन्दी (देवनागरी) में लिखना चाहता है उन्हें यह बात आर्देन पत्र के कालम 6 में स्पष्ट रूप से लिख देनी चाहिए अन्यथा यह समझा जाएगा कि के प्रश्न-पत्र के उत्तर अंग्रेजी में लिखेंगे।

टिप्पणी 4 : एक बार रखा गया विकल्प अंतिम माना जाएगा और आवेदन-पत्र के कालम 6 में परिवर्तन करने से संबंधित कोई अनुरोध साधारणतया स्वीकार नहीं किया जाएगा।

टिप्पणी 5 : प्रश्न पत्र 1 (क) तथा प्रश्न-पत्र 2 हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में दिये जायेंगे।

टिप्पणी 6 : उम्मीदवारों द्वारा अपनाई गई (आष्ट की गई) भाषा को छोड़कर अन्य किसी भाषा में लिखे प्रश्न-पत्र 2 के उत्तर को कोई महत्व नहीं दिया जाएगा।

टिप्पणी 7 (1) छप्ट विकलांग श्रेणी के अभ्यर्थियों के लिए दोनों ही प्रश्न-पत्र ब्रूज लिपि में होंगे। प्रश्न-पत्र (वस्तुनिष्ठ

प्रकार) में उन्हें अपना उत्तर ब्रूज प्रश्न-पत्रिका में ही दर्शाना होगा, जबकि प्रश्न-पत्र 2 में उन्हें प्रश्नों का उत्तर ब्रूज लिपि में देना होगा।

टिप्पणी 7 (2) : ऐसे अभ्यर्थियों को ब्रूज में उत्तर लिखने के लिए अपने उपकरण स्वयं लाने होंगे।

टिप्पणी 7 (3) : छप्ट विकलांग अभ्यर्थियों का प्रश्न-पत्र 1 में आधा घंटा तथा प्रश्न-पत्र 2 में एक घंटा अतिरिक्त समय दिया जाएगा।

4. उम्मीदवारों को सभी उत्तर अपने हाथ से लिखने होंगे। किसी भी हाथ में उन्हें उत्तर लिखने के लिए अन्य व्यक्ति की सहायता देने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

5. आयोग अपने विवेक से परीक्षा में किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्यालीफाइंग स्कोर) निर्धारित कर सकता है।

6. केवल कोरे सवहीं ज्ञान के लिए अंक नहीं दिये जायेंगे।

7. खराब लिखावट के कारण लिखित विषयों के अधिकतम अंकों के 5 प्रतिशत तक अंक काट दिए जायेंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि भाषाभिययितय कम से कम शब्दों में कमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से ठीक-ठाक की गई है।

अनुसूची

परीक्षा का पाठ्यक्रम विवरण

प्रश्नपत्र-1 (क) सामान्य जागरूकी-प्रश्न उम्मीदवारों के आस-पास के पर्यावरण के प्रति उसकी सामान्य जानकारी तथा समाज के प्रति उनके अनुप्रयोग के संबंध में उम्मीदवार की योग्यता की जांच करने के लिए पूछे जायेंगे। सामयिक घटनाओं और दिन-प्रतिदिन पर्यवेक्षण के ऐसे मामलों और उनके वैज्ञानिक पहलुओं के संबंध में ज्ञान की जांच करने के लिए प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनकी जानकारी की अपेक्षा एक शिक्षित व्यक्ति से की जाती है। इस परीक्षा में भारत और उसके पड़ोसी देशों के संबंध में विशेषकर इतिहास संस्कृति, भूगोल, आर्थिक दृष्ट, सामान्य राज अवस्था तथा वैज्ञानिक अनुसंधान से संबंधित प्रश्न भी पूछे जायेंगे।

(ख) अंग्रेजी भाषा का परिज्ञान तथा लेखन योग्यता—इस परीक्षा में अंग्रेजी भाषा शब्दावली, वर्तनी, व्याकरण, वाक्य संरचना, समानार्थक शब्द, वाक्य पूरा करना, वाक्यांश तथा शब्दों के महा-वरदेर प्रयोग इत्यादि के संबंध में उम्मीदवार के विवेक तथा ज्ञान को आंकने के लिए प्रश्न-पत्र तैयार किए जायेंगे। इसमें आच्छेद परिज्ञान पर भी प्रश्न होंगे।

प्रश्न पत्र 2—टिप्पणी व आलेख तथा कार्यालय पद्धति :

इस प्रश्न पत्र का प्रयोजन सचिवालय तथा संबंध कार्यालयों में कार्यालय पद्धति के बारे में उम्मीदवारों का ज्ञान और सामान्य

टिप्पण व आलेखन के निखन तथा सम्मान के उम्मीदवारों की योग्यता जांचना है।

केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा, पर्यटन विभाग, केन्द्रीय एग्रीकल्चर आर्य समाज संस्थान तथा चनाय बागों के उम्मीदवारों के चानिण कि इराके लिए कार्यालय पद्धति का नियम पुस्तक (मेनुअल आफ ऑफिस प्रोसीजर)—सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान द्वारा जारी की गई कार्यालय पद्धति इस टिप्पणियां क्लर्क आफ प्रोसीजर एण्ड कण्डेण्ट ऑफ डिजिनेस इस लोक सभा तथा राज्य सभा तथा संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग में संबंधित गृह मंत्रालय द्वारा जारी की गई आदेश पुस्तिका पढ़ें।

रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा के उम्मीदवारों के चानिण कि वे रेलवे बोर्ड द्वारा जारी की गई कार्यालय पद्धति, संहिता और लोक सभा और राज्य सभा में पत्रिका तथा कार्य संचालन के नियमों और संघ शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में संबंधित गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए आदेशों की हस्त पुस्तिका और इस प्रयोजन के लिए राजभाषा के प्रयोग में संबंधित भारतीय रेलवे के आदेश के संकलन का अभ्युन करें।

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

कम्पनी कार्य विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक 24 मार्च 1998

सं. ए-42011/9/97-असा.-2—कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 448 की उपधारा (1-क) द्वारा प्रवृत्त व्यक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने शासकीय समापक, उच्च न्यायालय, कलकत्ता के कार्यालय में उपनिदेशक (लेखा), श्री एस. कर्मकार को तत्काल प्रभाव से अगले आदेशों तक शासकीय समापक, कलकत्ता के उक्त कार्यालय में पदों उप शासकीय समापक के रूप में नियुक्त किया है।

जी. पी. सी.
अवर सचिव

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद

नई दिल्ली-1, दिनांक 3 अप्रैल 1998

कार्यालय आपन

विषय : सीएसआईआर के उपाध्यक्ष की नियुक्ति

सं. 1/1/98-सीटीई—सीएसआईआर के नियमों एवं विनियमों के नियम 3(ख) के परन्तुक के अनुसार विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के पदेन उपाध्यक्ष होंगे।

डा. जोशी ने 19 मार्च, 1998 को अपना पदभार संभाल लिया है।

अजय कुमार

संयुक्त सचिव (प्रशासन)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 30 मार्च 1998

अधिसूचना (53)

सं. एफ. 9-1/96-टी. एस.-111-ए (भाग)-1—शैक्षिक अहर्ता निर्धारण बोर्ड की रिफरिणों के आधार पर भारत सरकार ने निर्णय किया है कि इस मंत्रालय की अधिसूचना (37) फा. सं. 1-51/87-टी-7/टी-13/टीडी-5 दिनांक 5-8-92 द्वारा केन्द्रीय सरकार के अधीन पदों एवं संघाओं में रोजगार के प्रयोजनार्थ पहले ही मान्यता प्राप्त भारतीय वास्तविक संस्थान की एम्प्लोयिएट सदस्यता (परीक्षा के माध्यम से) की अहर्ता को दिस्मर, 1982 से मान्यता दिया जाना माना गया है।

विजय भारन

निदेशक (हकनीकी)

विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 27 मार्च 1998

सं. 6/2/97-पारपेण, विद्युत मंत्रालय के संकल्प संख्या 6/8/90-पारपेण, दिनांक 4 अगस्त, 1997 के आदेशिक संघर्ष में विद्युत के प्रभागी मंत्री, नागालैण्ड, नागालैण्ड सरकार के मुख्य सचिव की जगह पर उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय विद्युत बोर्ड के सदस्य होंगे।

आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि उपरोक्त संकल्प, असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैण्ड, और मिजोरम की राज्य सरकारों, उरुम और मंत्रालय के राज्य डिजली बोर्डों, नीपको, नेशनल हाइड्रो पेलीटिकल एवर कार्पोरेशन, पावरग्रिड कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय विजली बोर्ड, भारत सरकार के सभी मंत्रालय, प्रधानमंत्री के कार्यालय, राष्ट्रपति के सचिव, योजना आयोग और भारत के नियंत्रक एवं महालेखाकार को संसचित किया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम भूचना होने भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

ज. वासुदेवन

संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1998

No. 30-Pres/98.—The President is pleased to approve the award of *Kirti Chakra* to the undermentioned persons for act of conspicuous gallantry :—

1. MAJOR SUKHWINDER JEET SINGH RANDHAWA (IC-48190) ARTILLERY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 17th June, 1997)

On 17 June 1997, at 0700 hours Major Sukhwinder Jeet Singh Randhawa while on area domination of village Kasampur, District Poonch, Jammu and Kashmir entered the village from the South having detached one party to approach from North.

A group of militants hiding in the village after firing indiscriminately at the Northern column attempted to escape towards the South. The officer reorganised his troops to block off all escape routes. While he was moving around, deploying his troops, one militant who was hiding in a Nallah fired towards Major Sukhwinder Jeet Singh Randhawa. The officer received a shot in his hip. Despite being grievously wounded, the officer stood his ground, turned towards the firing militant and killed him with a burst.

Thereafter, the officer, despite bleeding profusely from his hip turned left to take charge of his command, where he saw a militant engaging his men from behind a boulder. Judging the danger to his subordinates, Major Randhawa charged towards the militant, firing from his hip. The militant after lobbing a hand grenade, brought down effective fire on the officer. He received splinter injuries from the grenade. Undeterred, the officer bleeding profusely, continued his single handed charge and shot dead the militant from close quarters.

Another militant hiding nearby fired injuring him in his abdomen due to which the officer collapsed. His last words to his buddy who rushed to help him were "TU MERI FIKAR CHOD US MILITANT TO MAR". He then breathed his last.

Major Sukhwinder Jeet Singh displayed daredevil courage, indomitable fighting spirit even in the face of death.

2. MAJOR BRAJ KISHORE SHARMA (IC-40788), ARTILLERY, (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 9th November, 1997)

On 09 November 1997 at around 0900 hours Major Braj Kishore Sharma of 168 Field Regiment (Longewala), deployed in Assam, while returning from leave with his family in Sharmik Express from Sultanganj, Bihar, fought valiantly with four armed hostiles who had started to loot the passengers from one of the compartment on the moving train.

The officer displayed unparalleled courage when with utter disregard to his personal safety and being unarmed he fought with the armed hostiles who approached the fellow passengers around him. The officer succeeded in pinning down and disarming two of them. Another armed hostile shot the officer in the chest. Unmindful of the injury and its grave consequences, the officer continued to challenge the hostiles while exhorting fellow passengers to fight. Some passengers closed in forcing the hostiles to panic, and flee by jumping out of the train. The officer succumbed to his injuries while being taken to the Hospital, at about 1930 hours.

Major Braj Kishore Sharma thus, displayed conspicuous act of bravery in the highest tradition of the army and made the supreme sacrifice to save the lives and property of his co-passengers. He has set an example of service before self for the younger generation to emulate.

3. MAJOR PADMANABHAN SRIKUMAR (IC-49722), 27 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12th December, 1997)

Major Padmanabhan Srikumar was posted with 27 Rashtriya Rifles. On 12 Dec 97 the unit launched an opera-

tion to flush out militants from their jungle hideout around Hari Budha in Poonch District of Jammu and Kashmir.

Tasked to encircle the suspected hideout, Major Padmanabhan Srikumar the leading column commander, came under heavy automatic fire of a Pika Machine Gun at 1045 hours which wounded two other ranks and pinned down his column. Displaying outstanding leadership and conspicuous bravery, the officer, unmindful of his personal safety moved through the jungle and assaulted the hideout killing one militant in a fierce fire fight in which he was mortally wounded. Despite all odds, Major Padmanabhan Srikumar exhorted his troops and continued the operation killing four more hardcore militants and recovering large quantities of arms and ammunition. In doing so, the officer was killed in action at 1145 hours on 12 December 1997.

Major Padmanabhan Srikumar thus displayed leadership qualities, conspicuous gallantry, unflinching devotion to duty and made the supreme sacrifice while fighting the militants.

S. K. SHERIFF
Joint Secretary to the President

No. 31-Pres/98.—The President is pleased to approve the award of *Vir Chakra* to the undermentioned persons for acts of gallantry in the face of enemy :—

1. MAJOR DEEPENDER BHUCHAR (IC-42330), 24 PUNJAB, (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 23rd August, 1997)

On 23 August 1997 at approximately 0845 hours Major Deepender Bhuchar observed that his forward isolated post on the Line of Control in the North Jhelum Sub Sector Uri Sector in Jammu and Kashmir was under intense enemy mortar, artillery and observed Heavy Machine Gun (HMG) fire. Major Deepender Bhuchar in the face of heavy enemy shelling and accurate direct fire, rushed along the crawl trench to direct own retaliatory fire. On reaching the post, the officer observed that the situation warranted effective retaliation. In the face of observed HMG fire from enemy on own post he personally manned the 106 mm Recoilless Gun in the open. At grave risk to his own life he engaged an enemy bunker, completely destroying it and killing two enemy soldiers. While effectively engaging the enemy, an enemy heavy mortar shell caused grievous splinter wounds to Major Deepender Bhuchar. Undeterred by his serious wounds, he continued to man the Recoilless Gun and engaged another HMG bunker which was bringing down effective fire on the post, destroying it by a direct hit. Though in a semi-conscious state, due to heavy loss of blood, Major Bhuchar continued to exhort troops to disregard his wounds and motivated them to continue effective execution of own retaliatory fire, till his last breath. On 23 August 1997 he sacrificed his life fighting for the defence of the country. Major Deepender Bhuchar thus displayed bravery and courage, in the face of enemy and made the supreme sacrifice.

2. 2480984 LANCE NAIK SHAMSHER SINGH, 24 PUNJAB (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 23 August, 1997)

On 23 August 1997 Lance Naik Shamsheer Singh was manning the 106 mm Recoilless Gun at own isolated forward post in the Uri Sector near the Line of Control. At approximately 0845 hours, the enemy resorted to heavy artillery mortars and observed Heavy Machine Gun fire on own post.

Lance Naik Shamsheer Singh operating successfully engaged an enemy bunker, completely destroying it and killing two enemy soldiers. While effectively engaging the enemy, an enemy mortar shell caused grievous splinter wounds to Lance Naik Shamsheer Singh. In spite of being ordered by the officer Lance Naik Shamsheer Singh, undeterred by serious wounds, refused to be evacuated. On observing the criticality of the situation and realising his responsibility and commitment as a Non Commissioned Officer, Lance Naik Shamsheer Singh assumed control of the 84 mm Rocket Launcher detachment and engaged the enemy post, successfully destroying another bunker and killing one more enemy

soldier. Exhibiting conspicuous form of gallantry, Lance Naik Shamsher Singh breathed his last on 23 August 1997 while firing the 84 mm RL in a near semi-conscious state, on the Line Control. He sacrificed his life fighting for the defence of the country, in the highest traditions of the Indian Army.

Lance Naik Shamsher Singh thus displayed a conspicuous act of gallantry in the face of enemy, determination and grit and supreme self sacrifice.

S. K. SHERIFF

Joint Secretary to the President

New Delhi, the 26th January 1998

No. 32-Pres/98.—The President, is pleased to approve the award of *Shaurya Chakra* to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry:—

**1. PILOT OFFICER VAIBHAV BHAGWAT (23546)
FLYING (PILOT) (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award 26th August, 1996)

Pilot Officer Vaibhav Bhagwat was on the posted strength of 130 Helicopter Unit since 22 Jul 96 till 26 Aug 96, when he laid down his life for the country.

Pilot Officer Vaibhav Bhagwat was detailed as a co-pilot for crucial air maintenance sorties in Op-Meghdoot area during the month of Aug 1996 when enemy had redeployed forces threatening out posts in the area. On 26 Aug 96, a special sortie was undertaken in MI-17 Helicopter to Hoshiyar post on the Southern glacier. The post was threatened by enemy fire but air maintenance was planned to drop essential supplies to maintain our troops. After the load was dropped, the helicopter was engaged by enemy ground fire and shot down killing all the occupants.

Pilot Officer Vaibhav Bhagwat displayed exhibiting bravery, courage and devotion to duty of the highest order and laid down his life for the country in the true tradition of the Indian Air Force

**2. SHRI DEVENDER SINGH, INDORE, MADHYA
PRADESH, (Posthumous)**

(Effective date of the award : 27 January, 1997)

On 27 Jan 1997, Shri Mohan Lal, accountant at Panna Lal Lathi Ram Petrol Pump, Indore and his colleague, Shri Inder Singh were going to deposit cash of Rs. 1.50 lakh in Dena Bank around 10.30-10.45 a.m. As soon as they reached opposite the bank, an unidentified man, standing at the nearby scooter stand, fired at them twice and tried to snatch the bag containing the cash from Shri Mohan Lal. As Shri Mohan Lal resisted his attempt, the culprit fired at Mohan Lal. The bullet hit him at the neck and Shri Mohan Lal fell down. In the meantime the criminal and his colleague snatched the bag containing cash and ran away on a red coloured Suzuki motor cycle. Shri Inder Singh threw a few stones on them and shouted. On hearing of shouts, Shri Devender Singh, a bystander, ignoring the risk to his own life, followed the armed culprits on scooter. As Shri Devender Singh reached near the criminals and tried to catch them, he was shot at by the criminals. He was rushed to the hospital where he succumbed to his injuries. The culprits have not been apprehended so far.

Shri Devender Singh, thus, showed exemplary courage in trying to foil the robbery and in the process made the supreme sacrifice.

3. 4269430 SEPOY RABINDRA KUMAR DAS, 8 BIHAR

(Effective date of the award : 25th February, 1997)

On 25 February 1997 Sepoy Rabindra Kumar Das was the scout of a covert operation launched with intelligence at Kumbi. Unaware of the Army Column presence four militants in a hijacked government jeep entered the Bazar and fired indiscriminately as a show of force and celebration. The column immediately reacted and an encounter ensued. Sepoy Rabindra Kumar Das was hit in the first volley and sustained gun shot wounds on both legs.

Unmindful of his injury he edged forward leaving a blood trail and killed the militant who had fired on him. Another Other Rank offered immediate help to which Sepoy Rabindra Kumar Das replied "Baad mein dekhenge". In a rare feat he recovered the militant's carbine along with a Rifle with magazine and six live rounds and one Jeep during the encounter.

In the successful covert well planned operation Sepoy Rabindra Kumar Das displayed rare courage, total professionalism, utter disregard to his personal safety, utmost dedication and devotion to duty.

**4. GS-088697Y DRIVER ENGINE STATIC SARWAN
SINGH BORDER ROAD DEVELOPMENT BOARD**

(Effective date of the award : 11th March, 1997)

Driver Engine Static, Sarwan Singh of Project Himank was deployed as operator on a dozer at Khardungla Top (altitude 18340 feet) for winter snow clearance.

On 11 March, 97, 13 Army Vehicles, 2 civil buses with 60 passengers and a few civil trucks were stuck due to a snow blizzard. In minus 26 degree centigrade temperature with visibility practically zero, Shri Sarwan Singh rushed down with his dozer and continued operating his dozer for hours till this convoy was safely cleared. The same day after mid night message was received that 2 civil buses with 60 passengers were struck near Km. 36. At 0330 hrs., though bone tired due to working late the previous day, he rushed down once again with his dozer and under inhuman conditions worked relentlessly till both buses were recovered to Khardungla Top by 0600 hrs. At 0730 hrs. the same day, he left Khardungla Top for Km-41 to clear snow so that the buses would proceed on their journey. After clearing 400 meters he and his machine were buried under huge snow avalanche. He was rescued and evacuated to Leh hospital.

Driver Engine Static Sarwan Singh, thus displayed exceptional courage conspicuous bravery, presence of mind and devotion to duty with utter disregard to his personal safety and saved 60 human lives in the face of extreme danger.

5. Major Amanpreet Singh Legha,

(IC-43491), 27.

Assam Rifles.

(Effective date of the award : 19th March 1997)

On 19 March 97, information collected with pains-taking effort by Major Amanpreet Singh Legha, 27 Assam Rifles led to an operation in New Village Chumukidima, Kohima district, Nagaland to kill a group of insurgents meeting there. The strike was totally unconventional by a small team led by Major Amanpreet Singh Legha from the front.

As the column approached the suspected house, the insurgents opened fire with sophisticated weapons. Major Amanpreet Singh Legha charged towards the insurgents firing and killing one and fatally injuring another insurgent. As the insurgents tried to flee, Major Amanpreet Singh Legha showed extreme presence of mind in the face of fire and rushed back to the Gypsy vehicle to cut off the escape route of insurgents. This move resulted in the entrapping and the killing of two more Undergrounds.

In the operation lasting about two hours his aggressive leadership led to the killing of eight hard core ultras and the capture of one female insurgent along with weapons and a large quantity of ammunition and incriminating documents with no casualties on our own side.

Major Amanpreet Singh Legha showed most conspicuous act of gallantry, courage, and devotion to duty in the face of fire.

6. 4188304 Sepoy Chandan Singh, 19 Kumaon,

(Posthumous)

(Effective date of the award : 19th March 1997)

On 19 March 1997 Sepoy Chandan Singh was placed as stop in the inner cordon of village Wodhpura in the Jammu and Kashmir Sector.

At 0920 hours while the search party approached the suspected group of houses the militant hiding inside the house ran out from the rear of the house firing at own troops. Sepoy Chandan Singh realising that the militant was escaping through the gap of cordon regardless of his own safety immediately pounced on him and in an one to one duel showered the militant with fire of his self loading rifle. The militant in a retaliatory action opened up fire on the stop party and started fleeing. In the ensuing scuffle Sepoy Chandan Singh sustained multiple gun shot wound. Though bleeding profusely, Sepoy Chandan Singh pursued and finally annihilated the militant single handedly. He later succumbed to own injury on 19 March 97. The brave action and supreme sacrifice enabled the search party to subsequently apprehend four militants with haul of arms and ammunition. Sepoy Chandan Singh thus displayed conspicuous gallantry, indomitable courage under heavy odds and made supreme sacrifice much above the call of duty in his fight against the dreaded militant.

7. 4262604 HAVILDAR BINOD KUMAR SHUKLA, 17 BIHAR. (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 22nd March, 1997)

On 22 March 1997, specific search operation at village Ahan District Srinagar in Jammu and Kashmir was launched. During the search the militants opened heavy volume of fire from the house where they were hiding on the troops.

Havildar Binod Kumar Shukla undeterred by the heavy volume of fire and with utter disregard to personal safety crawled close to a window under covering fire by his buddy and threw an improvised explosive device. This blast unnerved the militants. The militants attempted to escape into an adjacent house.

Havildar Binod Kumar Shukla reacted swiftly, by charging into the room and engaged the militant in hand to hand fight and killed him. He commenced engaging the second armed militant. In the process he sustained gun shot wound on his head, Havildar Binod Kumar Shukla kept engaging the other militants till he breathed his last on 22 March 97.

Havildar Binod Kumar Shukla thus displayed conspicuous gallantry, indomitable courage, extreme valour, true grit, exemplary junior leadership beyond the call of duty. He made supreme sacrifice of his life for the safety and integrity of his country.

8. 4263321 NAIK LALAN SINGH, 17 BIHAR

(Effective date of the award : 22nd March, 1997)

On 22 March 1997 during specific search operation at village Ahan, District Srinagar in Jammu and Kashmir, the militants who were well entrenched, brought heavy volume of fire on own troops. Own troops retaliated. Naik Lalan Singh and a Junior Commissioned Officer undeterred by the heavy volume of fire and with utter disregard to personal safety, crawled close to the window providing fire support to each other.

Naik Lalan Singh realising that last light was fast approaching, exhibiting bravery of the highest order, broke open a window, charged into the room and engaged the terrorist in a hand to hand fight and killed him.

On 23 March Naik Lalan Singh once again in a daring act closed on to the target house displayed cool courage and nerves of steel and extraordinary skill by closing on to the militants and charged onto a foreign militant killing him at very close and killed him in hand to hand fight and recovered two rifles, One grenade launcher and one pistol.

Naik Lalan Singh thus displayed exceptional gallantry, indomitable courage, extreme valour, true grit, exemplary initiative and dogged determination beyond the call of duty.

9. MAJOR VISWAJEET SINGH (IC-43007), 20 GRENADIERS

(Effective date of the award : 25th March, 1997)

On 25 March 97 at 2330 hours on receipt of information regarding move of four militants from Hamdania towards

Narakur in Jammu and Kashmir, Major Vishwajeet Singh stationed at Bemina, quickly appreciated their destination and side stepped stops at Narakur and Khumani Chowk.

At 2359 hours one militant was killed at Narakur. Remaining militants turned back towards Hamdania, fired at Major Vishwajeet Singh's approaching party at 0030 hours and disappeared in the built up area. Area was cordoned despite heavy firing by militants which continued till 0300 hours.

Two militants taking advantage of darkness tried to sneak through but were killed by Major Vishwajeet Singh. House to house search started at dawn. At 1100 hours fourth militant hiding in an abandoned house fired at Major Vishwajeet Singh's search party.

In a daring action he stormed the house by throwing grenade and spraying bullets, killing the militant instantaneously. In this operation he apprehended an underground, personally killed three militants out of four, recovered three AK rifles and one pistol with no casualty to troops.

Major Vishwajeet Singh thus displayed keen tactical acumen courage and bravery of highest order.

10. IC-412227 NAIB SUBEDAR JOGINDER NATH, 1 PARA (SPECIAL FORCES), (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 13th April, 1997)

Naib Subedar Joginder Nath of 1 PARA (Special Forces) was the commander of the rear flank of a column tasked to raid a hideout a dreaded insurgent group in Maphital Ridge, Ukhrul district, Manipur.

On the night of 13/14 April 97, the column had to negotiate sheer cliffs and extremely hostile jungle terrain to reach the hideout. On reaching just 1 Kilometer short of the hideout, the column came under heavy automatic fire from three directions.

Naib Subedar Joginder Nath retaliated with fire along with his two rear scouts to provide a safe passage to the advancing column. On realising the handicap due to the sheer cliff on one side, he decided to assault the insurgents. Firing his weapon and steadily advancing up the sheer cliff he was single handedly responsible for gaining an edge over the insurgents and providing safety to his comrades. During this assault he was hit with one bullet on his shoulder, despite the bullet injury he continued the assault returning fire with only one hand. He was once again hit with a bullet on his neck. Despite being severely wounded he continued to return fire till he finally succumbed to his injuries.

Displaying indomitable courage, he had killed a top militant and recovered his .38 US made revolver alongwith 12 rounds of ammunition and a large quantity of incriminating documents.

Naib Subedar Joginder Nath thus displayed indomitable, relentless determination in saving the live of his comrade and made the supreme sacrifice.

11. IC-218539 SUBEDAR SANTOKH SINGH, 6 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

(Effective date of the award : 21 April, 1997)

On 21 April 1997 Subedar Santokh Singh was leading a platoon column during counter insurgency operation in village Kodom, Senapati District of Manipur.

At 0345 hours while laying cordon around the village militants opened fire from a hideout. Subedar Santokh Singh immediately ordered his group to continue firing while he alongwith three other ranks rushed towards the log hut to destroy the underground hideout.

Undeterred by the fire of militants and with just three other ranks he reached the log hut with lightning speed making use of darkness and fog. He and another other rank threw two grenades inside the hut through the window and then brought down intense fire from their AK rifles and killed six militants.

Undeterred by the confusion, blast of grenades and firing from both sides, Subedar Santokh Singh rushed towards the door. Short of the door he found his radio operator on his knees in a state of frenzy holding the collar of an injured underground trying to escape. Subedar Santokh Singh put his foot on the chest of the underground and shot him and took position alongside the radio operator and another other rank, where another militant lay dead. All resistance and firing from the hideout subsided. After the encounter eight militants were found dead and nine sophisticated weapons recovered.

Subedar Santokh Singh thus showed gallantry, comradeship and dedication to duty with total disregard to personal safety.

12. MAJOR VICTOR PETER CHRISTOPHER (IC-47887), SM, 6 BIHAR

(Effective date of the award : 23rd April, 1997)

On night of 23/24 April 1997 Major Peter Christopher, based on specific intelligence headed a Quick Reaction Team (QRT) to a suspected hideout of the NSCN (IM) in Langthing North Cachar Hills, Assam. However not finding the militants at the designated place he pursued the leads which led to the hideout located in a saw mill in thickly forested bamboo jungle near Langthing.

The team reached close to the hideout. Where it was greeted with a heavy volume of automatic fire. Major Victor Peter Christopher, alongwith three of his men suffered bullet injuries.

Leading from the front this gallant officer inspite of his profusely bleeding arm, rallied his men and immediately returned the fire and with utter disregard to his personal safety, charged towards the house with this party. Firing with only one hand as a result of the bullet injury, the officer shot dead one insurgent on bursting in to the hut. The remaining two insurgents trying to flee were also shot dead. The team also recovered one AK rifle, one carbine assorted ammunition and incriminating documents.

Major Victor Peter Christopher, SM with a never say die attitude displayed indomitable courage, undaunted determination, presence of mind and bravery in killing three militants and recovering arms and ammunition.

13. MAJOR RAMESH SAMPATH (IC-45398), 13 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 11th June, 1997)

On 11 June 1997, 13 Rashtriya Rifles Battalion launched specific search operation in village Inderkut Tehsil Sonawaril in Baramulla District of Jammu and Kashmir. Contact with savage and belligerent militants, trapped in two storey target house, was established at 1700 hrs

Major Ramesh Sampath, the Company Commander on observing two militants on ground floor, alongwith his buddy closed on to the target house and shot dead two militants through a window. Militant on the first floor realising that the officer and his buddy were alongside the wall of the house, brought intense and accurate fire, denying withdrawal. Another militant on the ground floor engaged, the officer by firing along the wall. Undeterred by the intense and accurate fire, the officer closed towards the window and in a swift action lobbed two hand grenades thus killing one militant.

Major Ramesh Sampath who was still alongside the wall of the house, observing the two militants attempting escape, at approximately 2130 hours charged and shot dead both the militants at a close range of five meters. The officer's bullet proof jacket rendered militant's fire ineffective during this gun battle.

The slain militants were later identified as three foreign mercenaries. Four AK Rifles, one pistol, two Radio sets and a large quantity of war like stores were recovered

Major Ramesh Sampath thus displayed of combat tenacity, exceptional skill of arms and bravery of the highest order.

14. JC-224229 SUBEDAR JASHPAL SINGH, 6 SIKH HUMOUS)

(Effective date of the award : 22nd June, 1997)

On 22 June 1997 at 0430 hours Subedar Jashpal Singh while patrolling in Bachhpura, Srinagar in Jammu and Kashmir alongwith 15 other ranks observed suspicious movement inside one house. Subedar Jashpal Singh had the house cordoned and proceeded to search the house. The militants occupying the house opened fire. Subedar Jashpal Singh took position near the door and returned the fire, killing one militant instantaneously.

The other militants in the house in desperation threw grenades and opened heavy volume of automatic fire. One militant in a bid to escape from the front door fired at Subedar Jashpal Singh seriously wounding him. Subedar Jashpal showing nerves of steel fired at the militant and killed him before falling down in an injured state.

Meanwhile reinforcements came and augmented the cordon. Instead of allowing himself to be evacuated, Subedar Jashpal Singh alongwith an officer continued to fight with the militants. At that moment Subedar Jashpal Singh noticed another militant point his weapon to fire at them. Subedar Jashpal Singh alongwith the officer in a last valiant effort fired at the militant and killed him. Subedar Jashpal Singh slumped and finally succumbed to his injuries and made the supreme sacrifice for the call of duty.

Subedar Jashpal Singh's, action led to the death of three hardcore foreign militants and led to the capture of large quantity of weapons, ammunitions and explosives.

Subedar Jashpal Singh, thus, displayed conspicuous bravery, unparalleled tenacity, devotion to service beyond the call of duty and spirit of self sacrifice.

15. 13751723 RIFLEMAN SURJEET SINGH, JAMMU AND KASHMIR RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 28th June, 1997)

On 28 June 1997, at 1100 hours, Quick Reaction Team moved with Commanding Officer, 2 Maratha Light Infantry, to village Bihanigala to confront six heavily armed Militants. Rifleman Surjeet Singh, on leave from same village, immediately guided the troops to block escape routes and led them to the concrete house the militants had occupied. Aware of the murderous automatic and rifle grenade fire by the militants, he helped position the medium machine gun detachment, and exposing himself to fetch ammunition, passed through this belt of fire time and again till he was mortally wounded not withstanding which, he carried ammunition and collapsed by the machine gun and died. In so doing, he displayed the very highest qualities of courage, dedication beyond the call of comradeship. Rifleman Surjeet Singh died on the spot due to bullet injury on his head at 1530 hours on 28 June 1997.

Rifleman Surjeet Singh thus, displayed conspicuous courage in the face of militants and made the supreme.

16. 13616857 LANCE NAIK SARPUDEEN KHAN, 1 PARA (SPECIAL FORCES)

(Effective date of the award : 11th July, 1997)

On 11/12 Jul 1997 Lance Naik Sarpudeen Khan of 'C' Team, 1 PARA (Special Forces) was the leading scout during a cordon and search operation in Village Thingkangphai, District Churachandpur, Manipur.

Once the outer cordon was established the search party of which Lance Naik Sarpudeen Khan was a scout moved into the village to carry out selective search of suspect houses. All of a sudden the party came under heavy automatic fire from the first house. The troops retaliated with fire and the Troop Commander rushed towards the house. Seeing his troop commander Lance Naik Sarpudeen Khan broke cover and ran towards the house firing on the run and giving covering fire to the troop commander. On reaching the house Lance Naik

Sarpudeen Khan and the troop commander effected a swift entry into the house, which took the militants by surprise.

Lance Naik Sarpudeen Khan, on entering the house encountered two militants in the immediate vicinity to his right, the young commando soldier displaying true grit and presence of mind shot one militant on the spot and executed a swift Karate Kick on the other militant to render him off balance, he then pounced upon the militant and shot him in the head. This complete operation resulted in nine militants being killed, thirteen were apprehended and a large quantity of Arms/Ammunition were recovered.

Lance Naik Sarpudeen Khan thus, displayed raw courage in the face of militants and single handedly killed two armed militants in hand to hand combat.

17. 4263681 LANCE NAIK KAMTA PANDEY, 17 BIHAR (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12th July, 1997)

On 12 July 1997 based on specific information, suspect houses in village Kondabal District Srinagar in Jammu and Kashmir were effectively cordoned by 17 Bihar.

As the search parties approached the target house, belligerent foreign mercenaries opened heavy indiscriminate fire. Realising futility of escape, one mercilessly jumped out of the target house.

Lance Naik Kamta Pandey of Alfa Company reacting swiftly engaged the fleeing mercenary. A second mercenary sensing danger to his buddy brought down intense volume of fire on Lance Naik Kamta Pandey thereby injuring him. Undeterred by his injuries and displaying dogged determination lance Naik Kamta Pandey killed the first mercenary. The second mercenary attempting a desperate bid to escape firing indiscriminately charged at Lance Naik Kamta Pandey, who despite his injuries shot him dead in a close quarter gun battle. He then fired at the third mercenary in the house injuring him seriously before succumbing to his own injuries.

Lance Naik Kamta Pandey thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable courage, extreme valour, still like grid and rose beyond the call of duty and made the supreme sacrifice in his fight against foreign mercenaries.

18. SECOND LIEUTENANT PARAMJIT SINGH BAJWA (IC-56643), 6 PARA

(Effective date of the award : 19th July, 1997)

On night of 18/19 July 1997 at 1000 hrs the High Risk Mission Team under Second Lieutenant Paramjit Singh Bajwa was ordered to clear the area of village Nikke Tehsil Mahore in Udampur district of Jammu and Kashmir as an assault party member.

At 1245 hrs. the team came under intense automatic fire from under a boulder while searching the nullah bed. Second Lieutenant Paramjit Singh Bajwa immediately deployed an effective cordon. Realising the danger to his own troops who were unable to bring effective fire on the well-concealed militants the officer crawled upto the boulder and shot the militant dead. However while extricating the body he noticed a likely entrance to another hideout.

Displaying total disregard for personal safety, Second Lieutenant Paramjit Singh Bajwa closed in and lobbed two grenades into the hideout in spite of heavy retaliatory fire from within. He then personally fired on the hideout and killed the four foreign mercenaries concealed inside. Four AK rifles, large quantity of ammunition and incriminating documents were recovered.

In this action Second Lieutenant Paramjit Singh Bajwa thus, displayed gallantry and courage of the highest order, with total disregard to his personal safety, while fighting the militants.

19. MAJOR JASON JACOB JESU, (IC-52956), 11 MARATHA LIGHT INFANTRY

(Effective date of the award : 7th August, 1997)

On receipt of information from a source regarding a possible meeting of some militants at village Tarabari in Darrang District in Assam, Major Jason Jacob Jesu who was doing the dual duty of Adjutant and Company Commander quickly analysed the information, led a combined column of troops and stealthily surrounded the village by first light on 07 August 97.

While commencing house to house search, Major Jason Jacob Jesu and his search party came under fire from militants hiding in one of the houses. Major Jason Jacob Jesu himself sustained a bullet graze injury on the left chest, and the search party had been very effectively pinned down by the militants fire.

Despite the injury and grave threat to own life, he ordered two jawans to provide him covering fire, while he himself charged into the house, kicked open the door and shot dead one of the two militants there. A sten machine carbine, ammunition and grenades were found.

Thereafter the officer controlled the remaining operation resulting in the killing of seven more militants and recovery of large quantity of arms and ammunition besides one sophisticated Remote Controlled Explosive Device and two ICOM Radio Sets.

Major Jason Jacob Jesu, thus, displayed sheer grit, dogged determination, immense courage and excellent leadership while fighting the militants.

20. Lieutenant Commander Kamal Singh, (02728-Z)

(Effective date of the award : 14th September, 1997)

Visakhapatnam came to the brink of a disaster of an unprecedented magnitude in the early morning hours of 14 Sep 97. Huge fires raged at the HPCL Visakha Refinery, as a result of LPG Gas leaks at the refinery having ignited. A series of explosions resulted in fanning the fire to the nearby product storage POL tank and LPG Gas spheres. Hearing these explosions and seeing the huge orange balls of flame, Lt Cdr Kamal Singh immediately rushed to Port Defence Headquarters on his own initiative.

At about 6/00 hrs appreciating that a dangerous situation was developing, and that it may become increasingly difficult to combat the fire, Lt Cdr Kamal Singh set about mobilising available naval resources, alerting the ships and establishments. He reached the refinery with a small naval team, and on duly evaluating the conditions set about conducting the fire fighting operations. The officer realised that the LPG gas spheres which were on fire could explode any time. Despite searing heat, toxic soot and the flash of flames, Lt Cdr Kamal Singh displaying great alacrity approached the fire at Tank 125 and personally led the Naval/HPCL/Port personnel to fight the devastating fire, ultimately bringing it under control.

Continuously battling flames throughout the day, the officer at about 1700 hrs appreciated that the flames fanned by the westerly winds were threatening to spread to the diesel tanks, which were yet intact. Lt Cdr Kamal Singh, once again, disregarding the lurking danger and his personal safety closed into the proximity of the blazing Naptha Tank and resourcefully rigged up a fire hose from a nearby fire hydrant in extremely hazardous conditions. The officer fought the fire fearlessly and tirelessly for over 48 hrs at the site on 14/15/16 Sep 97 in daunting conditions. His efforts prevented loss of valuable lives and minimised vital national property losses.

Lieutenant Commander Kamal Singh, thus, displayed conspicuous bravery even at the risk of his own life above and beyond the call of duty and exemplary courage and leadership.

21. LIEUTENANT COMMANDER VINOD KUMAR JHA (02761-Z)

(Effective date of the award : 14th September, 1997)

On the fateful Sunday morning on 14 Sep 1997, Lieutenant Commander Vinod Kumar Jha was the Duty Officer

in MOC (V). At about 0630 hours he heard a loud explosion which shook the entire MOC (V) complex and shattered the door and window panes. Lt Cdr Jha, immediately rushed out to find out the cause and assess the situation. Lt Cdr Jha, sensing the looming danger to life and property, immediately informed the Duty Commander and proceeded to the site to carry out first hand investigation.

On arrival at the scene, Lt Cdr Jha witnessed utter chaos and panic with people running helter and skelter. A large number of tanks filled with petroleum products and LPG were aflame and burning furiously. No one was willing to go close to the scene of fire to assess the situation.

Major fires were raging in different clusters inside the HPCL compound. The need of the hour was to immediately organise and mobilise the available resources in order to prevent the fire from escalating and spreading towards the six huge tanks which contained diesel and kerosene. Lt Cdr Jha took stock of the situation by going close to the raging fire in different clusters and passed valuable information to MOC (V) and Port Defence Headquarters.

In the initial hours, when the fear of further explosions was foremost, Lt Cdr Jha moved around urging the people in vicinity to help in limiting the danger. At IOC terminal side, which was in extreme danger, Lt Cdr Jha alongwith Lt Pillai moved away two railway rakes of fuel tanks to safety and thereby prevented further escalation of fire. Having averted the immediate danger he alongwith Lt Pillai switched attention towards isolating the burning tanks from those still safe by identifying and closing the isolating valves which were burning hot. Lt Cdr Jha then organised the fire fighting arrangements available at the scene and urged the fire tenders, which were parked some distance away due to fear of explosions, to help in boundary cooling of the tanks which were still safe. The personal example and bravery exhibited by Lt Cdr Jha thus motivated others on the scene to join in a small team of Naval Personnel.

Lt Cdr Jha was also personally involved in organising evacuation of casualty from collapsed administrative and cafeteria buildings. The meticulous planning and exemplary courage shown by him in the face of adverse conditions had an overall salutary effect and enthused others to join him and limit the disaster from spreading in the initial hours. His untiring effort with complete disregard to personal safety had given a tremendous impetus to the men who rallied around him.

Lieutenant Commander Vinod Kumar Jha thus displayed conspicuous bravery even at the risk of his own life.

S. K. SHERIFF
Jt. Secy. to the President

DEPARTMENT OF PERSONNEL AND TRAINING

RULES

New Delhi, the 18th April 1998

No. 9/2/98-CS-II.—The rules for a Limited Departmental Competitive Examination for inclusion in the Select Lists for the Upper Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service, Railway Board Secretariat Clerical Service, Department of Tourism (Headquarters Estt.) Central Vigilance Commission, Ministry of Parliamentary Affairs and Election Commission of India to be held by the Staff Selection Commission in 1998 are published for general information.

2. The number of persons to be selected for inclusion in the select list will be specified in the notices issued by the Commission. Reservations shall be made for the candidates belonging to the Scheduled Castes and Scheduled Tribes after taking into account the vacancy position reported to the Commission by the indenting cadres/offices.

"A Scheduled Caste/Tribe means any of the Castes/Tribes specified in the Orders issued under Article 341/342 of the Constitution from time to time."

2A. Reservation shall also be made for candidates belonging to the physically handicapped (for OH & HH only).

3. The examination will be conducted by the Staff Selection Commission in the manner prescribed in the Appendix to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held, shall be fixed by the Commission.

4. Conditions of eligibility :—Any permanent or regularly appointed temporary officer of the Lower Division grade to the Central Secretariat Clerical Service, or Railway Board Secretariat Clerical Service, or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India who on 1-8-1998 satisfies the following conditions shall be eligible to appear at the examination.

(1) Length of Service

He should have on the 1-8-1998 rendered an approved and continuous service of not less than 5 years in the Lower Division Grades of the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or in the post of Lower Division Clerk in the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or in the Central Vigilance Commission or in the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India.

Provided that if he had been appointed to the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service, Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India on the result of a Competitive Examination, including a limited Departmental Competitive Examination, the result of such examination should have been announced not less than 5 years before the crucial date and he should have rendered not less than 4 years approved and continuous service in the Grade.

Note (1) The limit of 5 years of approved and continuous service will also apply if the total reckonable service of a candidate is partly as a Lower Division Clerk and partly, as Upper Division Clerk in the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India.

Note (2) Any permanent or regularly appointed temporary Lower Division Clerk of the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or Department of Tourism (Headquarters Estt.) or Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India who joined the Armed Forces during the period of operation of proclamation of emergency issued on 26th October, 1962, namely 26 Oct., 1962 to 9th January, 1968 would on reversion from the Armed Forces be allowed to count the period of his service (including the period of training if any) in the Armed Forces towards the prescribed minimum service.

Note (3) Lower Division Clerks who are on deputation to ex-cadre posts with the approval of the competent authority will be eligible, to be admitted to the examination if otherwise eligible. This, however, does not apply to a Lower Division Clerk who has been appointed to an ex-cadre post or to another services or "transfer" and does not have a lien in the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs or Election Commission of India.

(2) Age :

(a) He should not be more than 50 years of age as on 1-8-1998 i.e. he must not have been born earlier than 2-8-1948.

(c) The upper age limit prescribed above will be further relaxable :—

(i) upto a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

- (ii) upto a maximum of three years (eight years for SC/ST) in case of Defence Service personnel disabled in operation during hostilities with any foreign country or in disturbed area and released as a consequence thereof;
- (iii) upto a maximum of three years (eight years for SC/ST) in case of Border Security Force personnel disabled in operations during the Indo-Pakistan hostilities of 1971 and released as a consequence thereof;

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

3. Typewriting Test :—Unless exempted from passing the monthly/Quarterly Typewriting Test held by Department of Official Language under Hindi Teaching Scheme, Union Public Service Commission/Secretariat Training School/Institute of Secretariat Training and Management (Examination Wing)/Subordinate Service Commission/Staff Selection Commission for the purpose of confirmation in the Lower Division Grade, he should have passed this test on or before the date of notification of the examination from one of these organisation.

4. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

5. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

6. A candidate who is or has been declared by the Commission to be guilty of :—

- (i) obtaining support for his candidature by any means, or
- (ii) impersonating, or
- (iii) procuring impersonation by any person, or
- (iv) submitting fabricated documents or documents which have been tampered with, or
- (v) making statements which are incorrect or false or suppressing material information, or
- (vi) resorting to any other irregular or improper means in connection with his candidature for the examination, or
- (vii) using unfair means in the examination hall, or
- (viii) misbehaving in the examination hall, or
- (ix) writing irrelevant matter, including, obscene language or pornographic matter in the script(s), or
- (x) harassing or doing bodily harm to the staff employed by the Commission for the conduct of their examination, or
- (xi) violating any of the instruction issued to the candidates alongwith their Admission Certificates permitting them to take the examination, or
- (xii) taking away question booklet/answer sheet with him/her from the examination hall or passing it on to unauthorised person/persons during conduct of their examination, or
- (xiii) attempting to commit or, as the case may be abetting the commission of all or any of the acts specified in the foregoing clauses, may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution, be liable :—

- (a) to be disqualified by the Commission from the examination for which he is a candidate; or
- (b) to be debarred either permanently or for a or selection held by them;
 - (i) by the Commission from any examination for selection held by them;
 - (ii) by the Central Government from any employment under them, and

(c) to disciplinary action under the appropriate rules.

7. Any attempt on the part of the candidate to obtain support for his candidature by any means may be held by the Commission to be a conduct which would disqualified him for admission to the examination.

8. After the examination, the candidate will be arranged by the Commission, in six separate lists, in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate; and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified in the examination shall be recommended for inclusion in the Select Lists for the Upper Division Grade upto the required number :

Note :—Candidates should clearly understand that this is a competitive and not a qualifying examination. The number of persons to be included in the Select List for the Upper Division Grade on the results to the examination is entirely with in the competence of Government to decide. No candidate will, therefore, have any claim for inclusion in the Select List on the basis of his performance in this examination as a matter of right.

9. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in its discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

10. Success in the examination confers no right to selection unless the cadre authority is satisfied, after such enquiry as may be considered necessary that the candidate, having regard to his conduct in service, is suitable in all respects for selection.

Provided that the decision as to whether a particular candidate recommended for selection by the Commission is not suitable shall be taken in consultation with the Department of Personnel and Training.

12. A candidate, who after applying for admission to the examination or after appearing in it, resigns from his appointment in the Central Secretariat Clerical Service/Railway Board Secretariat Clerical Service/Department of Tourism (Headquarters Estt.)/Central Vigilance Commission/Ministry of Parliamentary Affairs/Election Commission of India or otherwise quits the Service or severs his connection with it, or whose services are terminated by his Department or who is appointed to an ex-cadre post or to another service on "transfer" and does not have a lien in the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service/Railway Board Secretariat Clerical Service/Department of Tourism (Headquarters Estt.)/Central Vigilance Commission/Ministry of Parliamentary Affairs/Election Commission of India will not be eligible for appointment on the result of this examination.

This however, does not apply to Lower Division Clerk who has been appointed on deputation to an ex-cadre post with the approval of the Competent authority.

H. S. DHIMAN
Under Secy.

APPENDIX

The examination shall be conducted according to the following Plan :—

Part I : Written Examination carrying a maximum of 300 marks in the subjects as shown in para 2 below.

Part II : Evaluation of record of service of such of the candidates who attain at the written examination, a minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion carrying a maximum of 100 marks.

2. The subject of the written examination in Part I, the maximum marks allotted to each papers and the time allowed will be as follows :—

Subject	Maximum Marks	Time
Paper I : (Objective type (a) General Awareness 100 Questions (b) Comprehension and writing ability of English Language 100 Questions	200	2 Hours
Paper II : Noting, Drafting & Office Procedure	100	2 Hours

Paper I : Will be Objective-Multiple-Choice-Type whereas

Paper II : Will be descriptive type.

Note : There will be separate papers on Noting, Drafting and Office Procedure for candidates belonging to the two categories, viz.

(i) C.S.C.S., Department of Tourism (Headquarters Estt.), Central Vigilance Commission, Ministry of Parliamentary Affairs and Election Commission of India.

(ii) R. B. & C. S.

3. The syllabus for the examination will be as shown in the Schedule below.

Note 1 : Candidates are allowed the option to answer the Paper II on Noting, Drafting & Office Procedure either in English or Hindi.

Note 2 : The option will be for a complete paper and not for different question in the same paper.

Note 3 : Candidates desirous of exercising of the option to answer the aforesaid paper in Hindi (Devanagiri) or in English should indicate their intention to do so clearly in column 6 of the application form; otherwise, it would be presumed that they would answer the paper in English.

Note 4 : The option once exercised shall be treated as final and no request for alteration in column 6 of the application form shall ordinarily be entertained.

Note 5 : Question paper in respect of Paper I and Paper II will be supplied both in Hindi and English.

Note 6 : No credit for Paper II will be given for an answer written in a language other than the one opted by the candidate.

Note 7(i) : For VH Category candidates, both the Question paper would be set in braille. In Paper I (Objective type) they will mark their answers in the braille Question booklet itself. While Paper II they will have to answer the Questions in braille.

Note 7(ii) : Such candidates would be required to bring they will have to answer the Questions in braille.

Note 7(iii) : VH category candidates would be allowed an extra time of half an hour in Paper I and one hour in Paper II.

4. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write answers for them.

5. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all subjects of the examination.

6. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

7. Deduction upto 5 per cent of the maximum marks in the written subjects will be made for illegible handwriting.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression, combined with due economy of words in all subjects of the examination.

SCHEDULE

SYLLABUS OF EXAMINATION

Paper I (a) : General Awareness :—Questions will be aimed at testing the candidates general awareness of the environment around him and its application to the society. Questions will also be designed to test knowledge of current events and of such matters of every day observations and experience in their scientific aspect as may be expected of an educated person. The test will also include questions relating to India and its neighbouring countries especially pertaining to History, Culture, Geography, Economic Scene, General polity and scientific aspect as may be expected of an educated person. The test will also include questions relating to India and its neighbouring countries especially pertaining to History, Culture, Geography, Economic Scene, General polity and scientific research.

(b) Comprehension and Writing Ability of English Language :—Questions will be designed to test the candidates understanding and knowledge of English Language, vocabulary, spellings, grammar sentence structure, synonyms, antonyms, sentence completion, phrases and idiomatic use of words etc. There will be a question on comprehension of a passage also. Paper II Noting and Drafting.

Paper II—Noting and Drafting and Office Procedure :—

The paper of Noting and Drafting and Office Procedure will be designed to test the candidates knowledge of Office Procedure in the Secretariat and Attached Offices and generally their ability to write and understand notes and drafts.

Candidates belonging to Central Secretariat Clerical Service/Department of Tourism (Headquarters Estt)/Central Vigilance Commission/Ministry of Parliamentary Affairs/Election Commission of India are required to study the Manual of Office Procedure, Note on Office Procedure issued by the Institute of Secretariat Training and Management and the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Lok Sabha and Rajya Sabha and the Hand Book of orders issued by the Ministry of Home Affairs regarding use of Hindi for Official purposes of the Union.

Candidates belonging to Railway Board Secretariat Clerical Services are required to Study the Manual of Office Procedure issued by the Railway Board and the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Lok Sabha and the Rajya Sabha and the Hand Book of Orders issued by the Ministry of Home Affairs regarding use of Hindi for official purpose of the Union and the Indian Railways, Compendium of orders regarding use of official Language for this purpose.

MINISTRY OF FINANCE

DEPARTMENT OF COMPANY AFFAIRS

New Delhi, the 24th March 1998

No. A-42011/9/97-Admn.II (Pt.II).—In exercise of the powers conferred by Sub-Section (1-A) of Section 448 of the Companies Act, 1956, the Central Government have appointed Shri S. Karmakar, Deputy Director (Accounts) in the Office of Official Liquidator, High Court, Calcutta, as Ex-officio Dy. Official Liquidator in the said Office of OL, Calcutta with immediate effect and until further orders.

D. P. SAINI, Under Secy.

COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH

New Delhi-1, the 3rd April 1998

OFFICE MEMORANDUM

Sub: Appointment of Vice-President, CSIR.

No. 1/1/98-STE.—In pursuance of the proviso to Rule 3(b) of the Rules & Regulations of CSIR, Dr. M. M. Joshi, Minister for Science & Technology shall be the ex-officio Vice-President, CSIR.

Dr. Joshi assumed charge of his office with effect from 19th March, 1998.

AJAY KUMAR, Jt. Secy (Admn.)

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 30th March 1998

NOTIFICATION (53)

No. F9-1/96-TS III.A.(P).—On the recommendations of the Board of Assessment for Educational Qualifications, the Government of India have decided that the qualification of Associate Membership of the Indian Institute of Architects (by Examination), already recognised for the purpose of employment to posts and services under the Central Government vide this Ministry's notification (37), F. No. 1-51/87/T7/T13/TD.V dated 5-8-92 is considered to be recognised with effect from December 1982.

VIJAY BHARAT, Director (Tech.)

MINISTRY OF POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 27th March 1998

No. 6 2/97-Trans.—In partial modification of Ministry of Power Resolution No. 6/8/90-Trans, dated 4th August, 1997, Minister Incharge of Power, Nagaland will be a member of North Eastern Regional Electricity Board in place of Chief Secretary to the Government of Nagaland.

ORDER

Ordered that the above Resolution be communicated to the State Governments of Assam, Manipur, Arunachal Pradesh, Tripura, Meghalaya, Nagaland and Mizoram, the State Electricity Boards of Assam and Meghalaya, the NEEPCO, the National Hydro-electric Power Corporation, the Power Grid Corporation of India Limited, the Central Electricity Authority, the North Eastern Regional Electricity Board, all Ministries of Government of India, the Prime Minister's Office, the Secretary to the President, the Planning Commission and the Comptroller and Auditor General of India.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

J. VASUDEVAN, Jt. Secy.

